Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक- 44

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

11 रबीयुल अव्वल 1441 हिज्री कमरी 29 इख़ा 1399 हिज्री शम्सी 29 अक्तूबर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुदा की मार्फ़त में जो लज़्ज़त है वह एक ऐसी चीज़ है कि जो न आँखों ने देखी और न कानों ने सुनी न किसी और कर्म इन्द्रिय ने इसको महसूस किया है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

जनवरी 1898 ई दुनिया और दुनयावी ख़ुशियों की वास्तविकता

दुनिया और दुनिया की ख़ुशियों की हक़ीक़त खेल तमाशा से अधिक नहीं। या तो वे अस्थायी और कुछ दिन की हैं और ऐसी ही हैं और उन ख़ुशियों का परिणाम यह होता है कि इन्सान ख़ुदा से दूर जा पड़ता है। परन्तु ख़ुदा की मार्फ़त (अनुभूति) में जो आन्नद है वह एक ऐसी चीज़ है कि जो न आँखों ने देखी और न कानों ने सुनी न किसी और कर्म इन्द्रिय ने इसको महसूस किया है। वह एक चीर कर निकल जाने वाली चीज़ है। हर क्षण एक नई राहत उस से पैदा होती है जो पहले नहीं देखी होती।

ख़ुदा तआला के साथ इन्सान का एक विशेष सम्बन्ध है। इर्फ़ान वाले लोगों ने बशरियत और रबूबियत के जोड़ा पर बहुत सूक्ष्म बहसें की हैं। अगर बच्चे का मुँह पत्थर से लगाऐं तो क्या कोई बुद्धिमान विचार कर सकता है कि इस पत्थर में से दूध निकल आएगा और बच्चा तृप्त हो जाएगा। हरगिज़ नहीं। इसी तरह जब तक इन्सान ख़ुदा तआला के आस्ताने पर नहीं गिरता, उस की रूह सम्पूर्ण झुक कर रबूबियत से सम्बन्ध पैदा नहीं करती और नहीं कर सकती जब तक कि वह शून्य या शून्य के समान न हो, क्योंकि रबूबियत इसी को चाहती है। उस वक़्त तक वह रुहानी दूध से परवरिश नहीं पा सकता।

लहव में खाने पीने के समस्त आनन्द शामिल हैं। इन का अन्जाम देखो कि गन्दगी के अतिरिक्त और क्या है। सुन्दरता, सवारी, अच्छे मकान पर गर्व करना या हुकूमत तथा ख़ानदान पर अंहकार करना ये सब बातें ऐसी हैं कि अन्त में इससे एक किस्म की हीनता पैदा हो जाती है जो दुख देती और तबीयत को परेशान और बेचैन कर देती है।

लअब (खेल कूद) में औरतों की मुहब्बत भी शामिल है। इन्सान औरत के पास जाता है परन्तु थोड़ी देर के बाद वह मुहब्बत और लज़्ज़त गन्दगी में बदल जाती है लेकिन यदि यह सब कुछ केवल अल्लाह तआला के साथ एक हक़ीक़ी इश्क़ होने के बाद हो तो फिर राहत पर राहत और लज़्ज़त पर लज़्ज़त मिलती है। यहां तक कि सच्ची मार्फत के दरवाज़े खुल जाते हैं और वह एक स्थायी और अनश्वर राहत में दाख़िल हो जाता है जहां पाकीज़गी और पवित्रता के सिवा कुछ नहीं। वह ख़ुदा में लज़्ज़त है। इसको प्राप्त करने की कोशिश करो और उसे ही पाओ कि वास्तविक लज़्ज़त वही है। (अल्हकम जिल्द 3 नम्बर 22 दिनांक 23 जून 1899 ई पृष्ठ 1)

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 195 से 196 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आंहज़रत नमांज़ में यह दुआ मांगते

عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَدْعُوْ فِى الصَّلَاةِ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَفِتْنَةِ الْمَمَاتِ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْمَاْثَمِ وَالْمَغْرَمِ فَقَالَ لَهُ قَائِلٌ مَا اَكْثَرَ مَا تَسْتَعِيْذُ مِنَ الْمَغْرَمِ فَقَالَ اِنَّ الرَّجُلَ اِذَا غَرِمَ حَدَّثَ فَكَذَبَ وَوَعَدَ فَاَخْلَفَ۔

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह नमाज़ में (तशह्हुद के बाद)यह दुआ किया करते थे। हे अल्लाह क़ब्र के अज़ाब से मैं तेरी पनाह लेता हूँ। मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से भी तेरी पनाह लेता हूं और मौत और ज़िन्दगी के फ़ित्ने से भी तेरी पनाह लेता हूँ। हे अल्लाह! गुनाह और क़र्ज़ से भी तेरी पनाह लेता हूँ। किसी कहने वाले ने आप से कहा आश्चर्य है कि आप कर्ज़ लेने से प्राय पनाह मांगते हैं। आप ने फ़रमाया जब आदमी कर्ज़दार होता है तो अपनी बात में झूठा हो जाता है और जब वादा करता है तो वादा तोड़ता है।

(सहीह बुख़ारी भाग 2 किताबुल आज़ान प्रकाशन 2006 ई कादियान)

इस्लाम ने जुमा के दिन के लिए ये विशेषताएं निर्धारित फ़रमाई हैं। इस दिन छुट्टी रखी जाए । इबादत अधिक की जाए उसे क़ौमी इज्तिमा का दिन बनाया जाए। नहाया धोया जाए। सफ़ाई की जाए। मरीज़ों की अयादत की जाए इसी तरह अन्य क़ौमी और सांस्कृतिक काम किए जाएं।

गर्वनमेंट ने भी अहमदिया जमाअत के संस्थापक के, मैमोरियल और जमाअत अहमदिया की कोशिशों से बहुत मुश्किल के बाद जुमा की नमाज़ के लिए एक घंटा की छुट्टी स्वीकार की है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

"यहूदियों में सबत हफ़्ता को मनाया जाता था और बाइबल से हफ़्ता का दिन ही इस बात के लिए प्रमाणित है (इस लिए सबत के अर्थ ही हफ़्ता के दिन के हो गए वर्ना असल अर्थ सबत के यही हैं कि जिस दिन दैनिक के काम छोड़ दिए जाएं और इस कारण से कह सकते हैं कि बनी इस्राईल का सबत हफ़्ता को होता है और मुसलमानों को जुम्अ: को ईसाइयों ने भी सबत के महत्व को स्वीकार किया है लेकिन इस के लिए इतवार का दिन निर्धारित कर दिया है और इसका कारण यह है कि कुछ यूरोपियन क़ौमों और बादशाहों ने जब ईसाइयत की तरफ़ झुकाव प्रकट किया तो उन्होंने अपने ईसाई होने की एक शर्त यह रखी कि छुट्टी का दिन इतवार क़रार दिया जाए और उन लोगों को ईसाई बनाने के लालच में पादरियों ने उनकी इस दावत को स्वीकार कर लिया और इस तरह प्रमाण के अपमान में वे यहूद से भी बढ़ गए क्योंकि यहूद तो सबत के दिन कभी कभी कोई लाभ का काम कर लिया करते थे लेकिन ईसाईयों ने हफ़्ता को हमेशा के लिए काम का दिन क़रार दे दिया और आराम के दिन के लिए इतवार को चुन लिया। अगर ख़ुदा तआला के हुक्म के अधीन ऐसा होता तो यह कोई आरोप योग्य बात न थी परन्तु यह जो कुछ हुआ ख़ुदा तआला के आदेश के अधीन नहीं हुआ। अपनी इच्छा से और हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम के सैंकड़ों साल बाद हुआ। हज़रत मसीह नासरी ख़ुद सबत का सम्मान किया करते थे। यद्यपि यहूदियों मैं जो सबत के बारे में जो सीमा से बढ़ जाना पैदा हो गया था

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-23)

एक हिक्मत वाले व्यक्ति का ख़िताब सुनने का अवसर मिला।

इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब से भी अमन की ख़ुशबू आती थी और आपके ख़िताब में भय अमन, सलामती और सच्चाई का प्रभाव था जो प्रोग्राम के समय सारे माहौल में मुझे महसूस होती रही (मेंबर आफ़ जर्मन पार्लियामेंट Bettina Muller साहिबा)

ख़लीफ़ा ने प्रमाणित किया कि इस्लाम और क़ुरआन ने धर्म की बुनियाद पहले दिन से ही इन्सानी हमदर्दी और अमन तथा सलामती की शिक्षा पर रखी है। मेरे विचार में इस ख़िताब की व्यापक पैमाने पर प्रचार होना चाहिए ताकि पश्चिम में इस्लाम के बारे में वास्तविक शिक्षा से आम लोगों को भी परिचय हो सके। (Alexander Radwan साहिब, मेंबर पार्लियामेंट)

इमाम जमाअत अहमदिया के इस ख़िताब का यूरोप में व्यापक पैमाने पर प्रकाशन होने से इस्लाम के बारे में पाए जाने वाली शंकाऐं दूर होंगे और एकतरफ़ा तौर पर पाए जाने वाले नकारात्मक विचारों को दूर किया जा सकेगा। Nahawandi साहिबा

ख़लीफ़ा की वैसे तो समस्त बातें मुझे पसंद आईं और उन्होंने एक बहुत ही प्यारी और अमन वाली बात प्रस्तुत की लेकिन एक बात जिसने मुझे बहुत हैरान किया वह यह थी कि अनिवार्य नहीं कि इन्सान बदला ले बल्कि माफ़ करना भी लाभ पहुंचा सकता है (एक मेहमान)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का बर्लिन में मेंबरान पार्लियामेंट और सम्मा-न्नीय लोगों से ख़िताब के बाद मेहमानों के ईमान बढ़ाने वाले विचार

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

22 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक मंगलवार) बाक़ी रिपोर्ट

मेहमानों के ईमान बढ़ाने वाले विचार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के ख़िताब ने शामिल होने वाले मेंबरान पार्लियामेंट और अन्य हुकूमती मेहमानों पर गहरे प्रभाव छोड़े। बहुत से मेहमानों ने अपनी भावनाओं को प्रकट किया।

मेंबर आफ़ जर्मन पार्लियामेंट बेटीना मूलर (Bettina Muller) साहिबा ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब से भी अमन की ख़ुशबू आती थी और आपके वजूद में भी अमन, सलामती और सच्चाई की तासीर थी जो सारे प्रोग्राम के सारे माहौल में मुझे महसूस होती रही।

मेंबर आफ़ पार्लियामेंट ज़ाकलेन नास्टिक (Zaklin Nastic) साहिबा ने कहा :इमाम जमाअत अहमदिया ने अपनी बात समस्त दृष्टिकोणों से स्पष्ट की और कोई शंका नहीं रहने दी। ऐसे स्पष्ट ख़िताबत की शैली सच्चाई और फ़िक्री दयानत के बिना संभव नहीं। मुझे इमाम जमाअत अहमदिया के शब्द शब्द से सहमति है।

Alexander Radwan साहिब जो मेंबर पार्लियामेंट हैं उन्होंने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: इमाम जमाअत अहमदिया ने जिस अमन और सलामती का पैग़ाम दिया उसका मूल क़ुरआन था और उन्होंने अपने विचारों का समर्थन क़ुरआन और इस्लाम धर्म के संस्थापक के उपदेशों से किया। यद्यपि यह नया विषय था और वर्तमान मांगों से बराबर था लेकिन ख़लीफ़ा ने अपने विचारों को पुराने इस्लामी आधारों से सहायता लेकर साबित किया कि इस्लाम और क़ुरआन ने धर्म की बुनियाद पहले दिन से ही इन्सानी हमदर्दी और अमन तथा सलामती की शिक्षा पर रखी है। मेरे विचार में इस ख़िताब का व्यापक पैमाने पर प्रसार होनी चाहिए ताकि पश्चिम में इस्लाम के बारे में वास्तविक शिक्षा से आम लोगों को भी पता लगे।

कर्स्टन बू शोलज़ (Christine Buchholz) साहिबा जो मेंबर पार्लियामेंट हैं अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं: इमाम जमाअत अहमदिया ने वर्तमान समय की नब्ज़ को बिल्कुल सही तौर पर महसूस किया है और चूँकि उनका इलाज ठीक है इसलिए उनके दिए गए इलाज में आर्थिक बदअमनी का स्थायी इलाज है।

गोख़न यहसल (Gokhal Yesil) साहिबा कहती हैं: इमाम जमाअत अहमदिया के तर्कपूर्ण विचारों ने मुझ पर गहरा असर छोड़ा है और मैं उम्मीद करती हूँ कि जहां तक यह पैग़ाम पहुँचेगा, तो पक्षपात रहित इन्सानी फ़ितरत इस से बिला झिझक सहमति करेगी।

नील अनन (Niel Annen) साहिब जो देश के वफ़ाक़ी वज़ीर हैं ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: जिस स्पष्टता, विस्तार और तुलनात्मक रूप के साथ इमाम जमाअत अहमदिया ने इस्लाम, अहमदियत और सामूहिक रूप से धर्म का परिचय और आर्थिक भूमिका स्पष्ट की है इसको समझने के बाद मेरे लिए यह अधिक आसान हो गया है कि मैं ऐसी जमाअत की पाकिस्तान में हक़ तलफ़ियों और ज़ालिमाना पाबंदियों के बारे में हर संभावित फ़ोर्म पर आवाज़ उठा सकूं। अब मैं महसूस करता हूँ कि जमाअत अहमदिया का इन्सानी अधिकार की सुरक्षा के लिए आवाज़ उठाना किसी धर्म या फ़िर्क़े की मदद नहीं बल्कि सामूहिक और विश्वव्यापी रूप से इन्सानी क़दरों के सुरक्षा की कोशिश होगी।

क्रिस्टोफ स्ट्रॉक (Christoph Strack) साहिब अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं मैंने ज़िन्दगी में शायद ही कोई ऐसा प्रोग्राम देखा हो या इसमें शामिल हुआ हूँ कि जिसको मुसलमानों ने आयोजित किया हो और उसकी सामूहिक फ़िज़ा ऐसी शान्ति वाली और इसमें होने वाली वार्तालाप इतनी सार गर्भित और तर्कपूर्ण हो। मुझे ख़ुशी हुई कि किसी की नज़र ज़ाहिरी तहज़ीब तथा संस्कृति और सामाजिक तरक़्क़ी के अंदर छिपे हुए मतभेदों को देख सकती है और इमाम जमाअत अहमदिया की हस्ती में मौजूद सच्चाई और निस्स्वार्थ इन्सानी हमदर्दी उनको ताक़त देती है कि वह खुल कर इन्सानियत के सिर पर मंडराने वाले ऐटमी जंग के ख़तरे से खुले शब्दों में ख़बरदार करें।

एमन्सिटी इंटरनेशनल के अनुवादक जनाब चहा (Chaa) साहिब कहते हैं: इमाम जमाअत अहमदिया की तक़रीर के अतिरिक्त उनका शख़्सियाती प्रभाव भी उतना गहरा है कि मुझे बात सुनकर दिल को सन्तोष महसूस होने लगा था और अपने से पहले ख़लीफ़ा के हवाले से उन्होंने तहज़ीब और सभ्यता की जो परिभाषा वर्णन फ़रमाई और दोनों का आपसी सम्बन्ध बताया इस से नवीन दौर के बुद्धमिान इन्कार नहीं कर सकते। ख़लीफ़ा ने कुरआन की आयतों की बड़े उत्तम रूप से वज़ाहत की। यह वही आयतें हैं जो इस्लाम से दूर लोग सन्दर्भ से हटा कर प्रस्तुत करते हैं।

जनाब फ़िलिस लोपोट (Fillis Lupot) साहिब जो मेंबर पार्लियामेंट हैं ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: इमाम जमाअत अहमदिया एक विनम्र मिज़ाज व्यक्ति हैं और समाज के जिस निचले वर्ग तक उनकी नज़र है और जिस सार से वह इन्सानी हमदर्दी और इन्सानी शिष्टाचारों के सम्मान की बात करते हैं इस से मैं यही समझा हूँ कि उनका पब्लिक से सम्पर्क बहुत गहरा और व्यक्तिगत है। और साधारण लोगों से जिस तरह की दूरी धार्मिक और राजनीतिक लीडरों में पाई जाती है, उनकी शख़्सियत इस से ऊंची है।

एक प्रोफ़ेसर हीरबर्ट हैरिटे (Prof.Heribert Hirte) साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: इमाम जमाअत अहमदिया ने अपनी जमाअत को शैक्षिक क्षेत्र में उच्च करके जमाअत अहमदिया को अन्य समस्त धार्मिक जमाअतों से अलग स्थान पर खड़ा कर दिया है। जिस जमाअत के लोग शिक्षा पर इतना ध्यान देंगे उनकी मंज़िल ही यह है कि वह क़ियादत करें न कि अंधा अनुसरण, इसलिए धार्मिक क्षेत्रों में एसी समझ रखने वाले मार्गदर्शक से मिलकर मुझे ख़ुशी हुई।

एक्सेल कंवर्ग (Axel Knoerig) साहिब जो मेंबर पार्लियामेंट हैं ने कहा: इस ज़माना में लीडरशिप पब्लिक और आवाम के दुखों से दूर है और केवल उनकी समस्याओं और मुश्किलों का वर्णन करते हैं परन्तु ज़ाती दर्द और एहसास से ख़ाली हैं। मुझे ख़ुशी हुई कि इमाम जमाअत अहमदिया की तक़रीर उनके पब्लिक से समपर्क को प्रतिबिम्ब करती थी और उनकी ज़ात से इन्सानों से ज़ाती मुहब्बत और हमदर्दी का प्रभाव मिलता है। मैं इस ख़िताब को जा कर दोबारा पढ़ूँगा और जहां तक मेरी पुहुंच होगी इसको आगे भी वर्णन करूँगा।

फ़िलज़पोलट (Filiz Polat) साहिबा जो मेंबर पार्लियामेंट हैं कहती हैं: इमाम

शेष पृष्ठ 12 पर

ख़ुत्बः जुमअः

तुम बिलाल रज़ि की अज़ान पर हंसते हो हालाँकि जब वह अज़ान देता है तो अल्लाह तआला अर्श पर ख़ुश होता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिलाल रज़ि क्या ही अच्छा इन्सान है, वह समस्त मुअज़्ज़िनों का सरदार है। इस का अनुकरण करने वाले सिर्फ़ मुअज़्ज़न ही होंगे और क़यामत के दिन सबसे लंबी गर्दनों वाले मुअज़्ज़न होंगे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत तीन लोगों से मिलने की बहुत इच्छुक है,अली रज़ि, अम्मार रज़ि और बिलाल रज़ि।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब मुझे जन्नत की तरफ़ रात को ले जाया गया तो मैं ने क़दमों की चाप सुनी मैं ने कहा हे जिब्राईल ये क़दमों की चाप कैसी है? जिब्राईल ने कहा यह बिलाल रज़ि हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिलाल रज़ि कितना ही अच्छा इन्सान है कि शहीदों और मुअज़्ज़नों का सरदार है। क्या उच्च मुक़ाम है इस बिलाल रज़ि का जिसे एक वक़्त में तुच्छ समझ कर पत्थरों पर घसीटा जाता था, हज़रत अबू बकर रज़ि इच्छा कर रहे हैं कि काश मैं बिलाल होता।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बिलाल रज़ि की मिसाल तो शहद की मक्खी जैसी है जो मीठे फलों और कड़वी बूटियों से भी रस चूसती है परन्तु जब शहद बनता है तो सारे का सारा मीठा हो जाता है।

यह थे हमारे सय्यदना बिलाल रज़ि जिन्होंने अपने आक़ा से ऐसा इशक़ किया के और अल्लाह तआला की तौहीद को अपने दिल में बिठाने और फिर उसके व्यावहारिक इज़हार के वे आदर्श स्थापित किए जो हमारे लिए उस्वा हैं, हमारे लिए पवित्र उदाहरण हैं।

मुअज़्ज़िन्ने रसूल, साबिक़ुल हब्शा, अहले जन्नत में शामिल महान बदरी सहाबी हज़रत बिलाल बिन रिबाह रज़ि अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

पाँच मरहूमीन मौलाना तालिब याक़ूब साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला ट्रेनी डॉड टोबागो, आदरणीय इंजनीयर इफ़्तिख़ार अली क़ुरैशी साहिब साबिक़ वकीलुल माल सालिस रब्वाह, नायब सदर मज्लिस तहरीक जदीद।

अदरणीया रज़ीया सुल्ताना साहिबा पत्नी हकीम ख़ुर्शीद अहमद साहिब साबिक़ सदर उमूमी रब्वाह , आदरणीय मुहम्मद ताहिर अहमद साहिब नायब नाज़िर बैयतुल माल कादियान और अज़ीज़म अक़ील अहमद इब्न मिर्ज़ा ख़लील अहमद बेग साहिब उस्ताद जामिआ अहमदिया इंटरनेशनल घाना का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 सितम्बर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाह तआला अन्हो का वर्णन चल रहा था। इस बारे में अब्दुल्लाह बिन बुरीदा अपने पिता से रिवायत करते हैं कि एक सुबह को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि को बुलाया और पूछा। हे बिलाल! क्या कारण है कि तुम जन्नत में मुझ से आगे रहते हो। जब कल शाम मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैं ने अपने आगे तुम्हारे क़दमों की चाप सुनी है। हज़रत बिलाल रज़ि ने निवेदन किया कि मैं जब भी अज़ान देता हूँ तो दो रकअत नफ़ल नमाज़ पढ़ता हूँ और जब भी मेरा वुज़ू टूट जाता है तो मैं वुज़ू कर लेता हूँ और मैं ख़्याल करता हूँ कि अल्लाह की तरफ़ से मुझ पर दो रकअत अदा करना वाजिब है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फिर यही कारण है।

(सुनन अत्तिरमज़ी, अबवाबुल मनाकिब, बाब अतीत अला क़सर मुरब्बा अन्त तक, हदीस 3689)

एक दूसरी रिवायत में इस तरह वर्णन है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि से सुबह की नमाज़ के वक़्त फ़रमाया बिलाल मुझे बताओ जो सबसे अधिक उम्मीद वाला काम तुमने इस्लाम में क्या किया है क्योंकि मैं ने बहिश्त में अपने आगे तुम्हारे क़दमों की चाप सुनी है। हज़रत बिलाल रज़ि ने कहा अपने नज़दीक तो मैं ने इस से अधिक उम्मीद वाला काम और कोई नहीं किया कि जब भी मैं ने रात को या दिन को किसी वक़्त वुज़ू किया तो मैं ने इस वुज़ू के साथ नमाज़ ज़रूर पढ़ी है जितनी भी मेरे लिए पढ़ना मुक़द्दर थी। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही अलबख़ारी ,किताबुल तहज्जुद, बाब फ़ज़ल अत्तहूर बिल्लैल वन्नहार, हदीस 1149)

इसका यह अर्थ नहीं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर आप हो गए बल्कि सिर्फ यह कि पवित्रता और छुपी इबादत के कारण से अल्लाह तआला ने उनको यह स्थान दिया कि वह जन्नत में भी इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हैं जिस तरह दुनिया में थे जैसा कि पिछली एक रिवायत में भी वर्णन हुआ था कि ईद के दिन हज़रत बिलाल रज़ि भाला पकड़ कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगे चलते थे और फिर क़िब्ला की तरफ भाला गाड़ते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां ईद पढ़ाते थे तो बहरहाल उनका यह सम्मान उनकी पवित्रता और इबादत के कारण से जन्नत में भी अल्लाह तआला ने स्थापित रखा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको अपने साथ एक नज़ारे में देखा।

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब मुझे जन्नत की तरफ़ रात को ले जाया गया तो मैं ने क़दमों की चाप सुनी। मैं ने कहा हे जिब्राईल यह क़दमों की चाप कैसी है? जिब्राईल ने कहा यह बिलाल रज़ि हैं। हज़रत अबू बकर रज़ि ने कहा कि हे काश मैं बिलाल की माँ के गर्भ से पैदा होता। हे काश बिलाल का बाप मेरा बाप होता और मैं बिलाल रज़ि की तरह होता। (मजमउल ज़वायद व मन्ब उल फवाइद, भाग 9 पृष्ठ 363 किताबुल मनाकिब ,बाब फ़ज़ल बिलाल अलमुअज़्ज़िन, हदीस 15635) क्या उच्च स्थान है इस बिलाल रज़ि का जिसे एक वक़्त में हीन समझ कर पत्थरों पर घसीटा जाता था।

हज़रत अबू बकर रज़ि इच्छा कर रहे हैं कि काश मैं बिलाल होता।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने आरम्भिक सहाबा का वर्णन करते हुए एक जगह इस तरह तहरीर फ़रमाया है कि "बिलाल बिन रिबाह रज़ि जो उमय्या बिन ख़लफ के हब्शी ग़ुलाम थे। हिजरत के बाद मदीना में अज़ान देने का काम उन्हीं के सपुर्द था परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उन्होंने अज़ान कहना छोड़ दिया था लेकिन जब हज़रत उमर रज़ि के ज़माना ख़िलाफ़त में सीरिया फ़तह हुआ तो एक बार हज़रत उमर रज़ि के बार बार कहने पर उन्होंने फिर अज़ान कही जिस पर सबको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना याद आ गया अत: वह ख़ुद और हज़रत उमर रज़ि और दूसरे सहाबा जो उस वक़्त मौजूद थे इतने रोए कि हिचकी बंध गई। हज़रत उमर रज़ि को बिलाल रज़ि से इतनी मुहब्बत थी कि जब वह फ़ौत हुए तो हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया आज मुसलमानों का सरदार गुज़र गया। यह एक ग़रीब हब्शी ग़ुलाम के बारे में समय के बादशाह का कथन था।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन, पृष्ठ 124-125)

एक अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ि ने अहमदी औरतों से ख़िताब फ़रमाते हुए यह जो कुरआन की आयत है कि اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ أَمَلًا यह ब्यान फ़रमाई और इस की तफ़सीर ब्यान करते हुए हज़रत बिलाल रज़ि का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि "एक ही चीज़ है जो बाक़ी रहने वाली है और वह है اَلْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ। वह काम जो ख़ुदा के लिए करोगे बाक़ी रहेगा।" फिर आप ने फ़रमाया कि "आज अबू हुरैरह रज़ि की औलाद कहाँ है, मकान कहां हैं?" कोई जायदाद नहीं, औलाद नहीं। हम नहीं जानते औलाद कहाँ है कि नहीं है। "लेकिन हम जिन्हों ने न उनकी औलाद देखी, न मकान देखे, न जायदाद देखी हम जब उनका नाम लेते हैं तो कहते हैं हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाह अन्हो।" आप फ़रमाते हैं कि "कुछ दिन हुए एक अरब आया उसने कहा कि मैं बिलाल रज़ि की औलाद में से हूँ। उसने मालूम नहीं सच कहा या झूठ परन्तु मेरा दिल उस वक़्त चाहता था कि मैं उससे चिमट जाऊं कि यह उस व्यक्ति की औलाद में से है जिसने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद में अज़ान दी थी। आज बिलाल रज़ि की औलाद है?" हम नहीं जानते कोई औलाद है भी कि नहीं और है तो कहाँ है। "उसके मकान कहाँ हैं? कोई जायदादें हमें नज़र नहीं आतीं। "उसकी जायदाद कहाँ है? मगर वह जो उसने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मस्जिद में अज़ान दी थी वह अब तक बाक़ी है और बाक़ी रहेगी।"

(मस्तूरात से ख़िताब , अनवारुल उलूम ,भाग 16 पृष्ठ 457-458)

और यह वे नेकियां हैं जो बाक़ी रहने वाली नेकियां हैं।

हज़रत बिलाल रज़ि से 44 हदीसें रिवायत हैं। सहीहीन में चार रिवायतें आई हैं।

(सैरुल आलामुल नबला लिल् इमाम अज़ज़हबी, भाग 1 पृष्ठ 360 "बिलाल बिन रिबाह" मुअसस अर्रसिला 2014 ई)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत तीन लोगों से मिलने की बहुत इच्छुक है। अली रज़ि, अम्मार रज़ि और बिलाल रज़ि।

(सैरुल आलामुल नबला लिल् इमाम अज़ज़हबी, भाग 1 पृष्ठ 355 "बिलाल बिन रिबाह" मुअसस अर्रसिला 2014 ई)

एक बार हज़रत उमर रज़ि हज़रत अबू बकर रज़ि के फ़ज़ाइल ब्यान कर रहे थे। आपने हज़रत अबू बकर रज़ि के फ़ज़ाइल ब्यान करते हुए हज़रत बिलाल रज़ि की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया यह बिलाल रज़ि जो हैं हमारे सरदार हैं। हज़रत अबू बकर रज़ि के फ़ज़ाइल ब्यान कर रहे हैं और वहां हज़रत बिलाल रज़ि बैठे हुए थे तो आप ने उनकी तरफ़ इशारा किया और फ़रमाया कि यह बिलाल रज़ि जो हैं हमारे सरदार हैं और हज़रत अबू बकर रज़ि की नेकियों में से एक नेकी हैं। (तारीख़ दमिशक़ अल-कबीर ले इब्ने असाकिर भाग 10 पृष्ठ 363 ज़िक्र मिन इस्महो बिलाल बिन रिबाह, दारे अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 2001 ई)क्योंकि हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत बिलाल रज़ि को ख़रीद कर ग़ुलामी से आज़ाद करवाया था।

आइज़ बिन अमरो से रिवायत है कि हज़रत सुलैमान रज़ि, हज़रत सुहैब रज़ि और हज़रत बिलाल रज़ि के पास जो एक भीड़ में थे अबूसुफ़ियान आए तो इस पर उन लोगों ने कहा अल्लाह की क़सम अल्लाह की तलवारें अल्लाह के दुश्मन की गर्दन पर अपनी जगह पर न पढ़ें। रावी कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ि ने कहा क्या तुम क़ुरैश के मुअज़्ज़िज़ और उनके सरदार के बारे में ऐसा कहते हो? हज़रत अबू बकर रज़ि ने जब उनको ये बातें करते सुना कि सही तरह हमने उनसे बदला नहीं लिया तो हज़रत अबू बकर रज़ि को यह बात अच्छी नहीं लगी। आप ने फ़रमाया कि तुम क़ुरैश के सरदार के बारे में ऐसी बात कहते हो? और इसके बाद फिर वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह बात बताई। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर रज़ि! शायद तुमने उन्हें नाराज़ कर दिया है। अगर तुमने उन्हें नाराज़ किया तो यक़ीनन तुमने अपने रब को नाराज़ किया। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ि उनके पास आए और कहा हे प्यारे भाइयो मैं ने तुम्हें नाराज़ कर दिया? हज़रत अबू बकर रज़ि तो यह बात लेकर गए थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस पर उनको कुछ रोकेंगे, टोकेंगे लेकिन उल्टा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुमने उन लोगों को नाराज़ कर दिया और हज़रत अबू बकर रज़ि का भी देखें क्या स्थान था शीघ्र इन ग़रीब लोगों के पास वापस गए और उन्हें कहा प्यारे भाइयो! मैं ने तुम्हें नाराज़ कर दिया है? उन्होंने कहा नहीं नहीं हे भाई अल्लाह आपकी मग़फ़िरत फ़रमाए कि ऐसी कोई बात नहीं है। आप ने हमें नाराज़ नहीं किया।

(सही मुस्लिम ,किताबुल फ़ज़ाइल अलसहाबा ,बाब मन फ़ज़ाइल सलमान व सुहैब व बिलाल, हदीस 2504)

हज़रत अबू मूसा से रिवायत है कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास था जबकि आप जिअरानह में ठहरे हुए थे जो मक्का और मदीना के मध्य है। हज़रत बिलाल रज़ि आपके साथ थे। एक देहाती व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और निवेदन किया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) क्या आप मुझसे अपना किया हुआ वादा पूरा न फ़रमाएँगे? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया तुम्हें ख़ुशख़बरी हो। इस पर देहाती कहने लगा कि मुझे ख़ुशख़बरी हो आप बड़ी बार कह चुके हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू मूसा रज़ि और हज़रत बिलाल रज़ि की तरफ़ मुतवज्जा हुए जैसे कोई नाराज़ हो। फिर उस देहाती की तरफ़ नहीं देखा। इन दोनों की तरफ़ ध्यान दिया और फ़रमाया कि उसने बिशारत को रद्द कर दिया। मैं उसको ख़ुशख़बरी दे रहा हूँ। उसने ख़ुशख़बरी को रद्द किया है। अत: तुम दोनों यह बिशारत स्वीकार कर लो। इन दोनों ने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! हमने स्वीकार किया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक प्याला मंगवाया जिसमें पानी था। इस पानी से अपने दोनों हाथ और चेहरा धोया और इस से कुल्ली की। फिर फ़रमाया तुम दोनों इस में से पी लो और दोनों अपने चेहरों और सीनों पर उंडेल लो और ख़ुश हो जाओ। अत: उन दोनों ने वह प्याला लिया और वैसे ही किया जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें करने का हुक्म फ़रमाया था तो पर्दे के पीछे से हज़रत उम्मे सलमा रज़ि ने उन्हें पुकारा कि जो तुम दोनों के बर्तन में है इस में से कुछ अपनी माँ के लिए अर्थात हज़रत उम्मे सलमा रज़ि, उम्मुल मोमनीन के लिए भी बचाओ तो इन दोनों ने उन के लिए इस में से कुछ दे दिया।

(सही मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइल अस्सहाबा, बाब मन फ़ज़ाइल अबी मूसा व अबी आमिर अलअशारीयन रज़ि अल्लाह अन्हुमा, हदीस 2497)

हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर नबी को अल्लाह तआला ने सात नक़ीब प्रदान फ़रमाए हैं और मुझे चौदह अर्थात दोगुने नक़ीब प्रदान हुए हैं। हमने निवेदन किया वे कौन हैं? हज़रत अली रज़ि ने कहा। मैं, मेरे दोनों बेटे और जाफ़र रज़ि अल्लाह तआला अन्हो और हमज़ा रज़ि और अबू बकर रज़ि और उमर रज़ि और मुसअब बिन उमैर रज़ि और बिलाल रज़ि और सुलैमान रज़ि और मुकदाद रज़ि और अबूज़र रज़ि और अम्मार रज़ि और अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि।

(सुनन अत्तिरमज़ी, अबवाबुल मनाकिब ,हदीस 3785)

हज़रत ज़ैद बिन अर्क़म रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिलाल रज़ि क्या ही अच्छा इन्सान है। वह समस्त मुअज़्ज़िनों का सरदार है। उसका अनुकरण करने वाले सिर्फ़ मुअज़्ज़िन ही होंगे और क़यामत के दिन सबसे लंबी गर्दनों वाले मुअज़्ज़िन ही होंगे।

(अल-मुस्तदरिक अलस्सहीहैन लिल्हाक़िम , ज़िक्र बिलाल बिन हदीस 5244 भाग 3 पृष्ठ 322 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत ज़ैद बिन अरकम रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम ने फ़रमाया बिलाल रज़ि कितना ही अच्छा इन्सान है कि शहीदों और मुअज़्ज़िनों का सरदार है और क़यामत वाले दिन सबसे लंबी गर्दन वाले हज़रत बिलाल रज़ि होंगे अर्थात बड़ी इज़्ज़त का स्थान उनको मिलेगा।

(मज्मउज़्ज़वाइद ,किताबुल मनाकिब, बाब फ़ज़ल अल मुअज़्ज़िन, भाग 9 पृष्ठ 363 हदीस 15636 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिलाल रज़ि को जन्नत की ऊंटनियों में से एक ऊंटनी दी जाएगी और वह इस पर सवार होंगे।

(सैरुल आलाम अलनबला लिल्मज़हबी, भाग 1 पृष्ठ 355 "बिलाल बिन रिबाह" मुअसस अर्रसाला 2014 ई)

हज़रत बिलाल रज़ि की पत्नी रिवायत करती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास आए और सलाम किया। फ़रमाया क्या बिलाल रज़ि यहां हैं? मैं ने जवाब दिया कि घर नहीं आए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :लगता है तुम बिलाल रज़ि से नाराज़ हो। मैं ने कहा वह मुझसे मुहब्बत करते हैं और वह हर बात पर यही कहते हैं कि यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई है। यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई है। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि की बीवी को फ़रमाया कि बिलाल रज़ि मुझसे जो बात तुम तक पहुंचाएं वह यक़ीनन सच्ची होगी और बिलाल रज़ि तुमसे ग़लत बात नहीं करेगा। अत: तुम बिलाल रज़ि पर कभी नाराज़ न होना वर्ना उस वक़्त तक तुम्हारा कोई कर्म स्वीकार न होगा जब तक तुमने बिलाल रज़ि को नाराज़ रखा।

(तारीख़ दमिशक़ अल-कबीर ले इब्न असाकिर भाग 10 पृष्ठ 356 ज़िक्र मिन अस्मा बिलाल बिन रिबाह, दार अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत 2001 ई)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बिलाल रज़ि की मिसाल तो शहद की मक्खी जैसी है जो मीठे फलों और कड़वी बोटियों से भी रस चूसती है परन्तु जब शहद बनता है तो सारे का सारा मीठा हो जाता है। सब मीठा हो जाता है।

(मज्मउज़्ज़वाइद ,किताबुल मनाकिब, बाब फ़ज़ल अल मुअज़्ज़िन, भाग 9 पृष्ठ 364 हदीस 15639 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001 ई)

हज़रत बिलाल रज़ि की पत्नी बयान करती हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि जब बिस्तर पर लेटते तो यह दुआ पढ़ा करते थे कि اَللّٰهُمَّ تَجَاوَزْ عَنْ سَيِّئَاتِيْ وَاعْذُرْنِيْ بِعِلَّاتِيْ हे अल्लाह तू मेरी ख़ताओं से दरगुज़र फ़र्मा और मेरी कोताहियों के बारे में मुझे असहाय समझ।

(अलमजमउल कबीर लित्तिबरानी बाब बिलाल बिन रिबाह भाग 01 पृष्ठ 337 हदीस 1009 दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी 2002 ई)

हज़रत बिलाल रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया हे बिलाल रज़ि ग़रीबी में मरना और अमीरी में न मरना। मैं ने निवेदन किया कि वह कैसे? यह किस तरह हो कि मैं ग़रीबी में मरूँ और अमीरी में न मरूँ। इस की समझ नहीं आई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो रिज़्क़ तुम्हें प्रदान किया जाए उसे सँभाल कर न रखना और जो चीज़ तुमसे मांगी जाए इस से मना न करना। मैं ने निवेदन की हे अल्लाह के रसूल अगर मैं ऐसा न कर सका तो क्या होगा? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐसा ही करना होगा वर्ना आग ठिकाना होगा।

(अलमजमउल कबीर लित्तिबरानी बाब बिलाल बिन रिबाह भाग 01 पृष्ठ 341 हदीस 1021 दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी 2002 ई)

अर्थात किसी पूछने वाले को धुतकारना नहीं और यह नहीं कि सिर्फ जोड़ते रहो और ख़र्च न करो। ख़र्च करना भी ज़रूरी है।

हज़रत बिलाल रज़ि की वफ़ात हज़रत उमर रज़ि के ख़िलाफ़त के समय में बीस हिज्री में दमिशक़ सीरिया में हुई। कुछ के नज़दीक आप की वफ़ात हलब में हुई। इस वक़्त हज़रत बिलाल रज़ि की उम्र साठ साल से अधिक थी। कुछ लोगों का ख़्याल है कि हज़रत बिलाल रज़ि की वफ़ात अठारह हिज्री में हुई। आप की तदफ़ीन दमिशक़ के क़ब्रिस्तान में बाब अल्सग़ीर के पास हुई।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्न सअद, भाग 3 पृष्ठ 180 "बिलाल बिन रिबाह "दारुल कुतुब अल्इलमिया 2017 ई (तारीख़ अल-दमिश्क़ ले इब्न असाकिर भाग 10 पृष्ठ 335 ज़िक्र मिन अस्मा बिलाल बिन रिबाह दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत 2001 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो हज़रत बिलाल रज़ि का मुक़ाम तथा मर्तबा ब्यान करते हुए फ़रमाते हैं। इस हवाले से मैं कुछ बातें पहले भी बयान कर चुका हूँ लेकिन बात की जो निरन्तरता है इस के कारण से शायद यहां दुबारा शुरू की एक दो बातें आ जाएं

हज़रत बिलाल रज़ि हब्शी थे अरबी भाषा नहीं जानते थे और अरबी बोलते हुए वह बहुत सी ग़लतियां कर जाते थे जैसे हब्शा के लोग शीन को सीन कहते थे। अत: बिलाल जब अज़ान देते हुए अशदो को असदो कहते तो अरब के लोग हंसते थे क्योंकि उनके अंदर क़ौमी बरतरी का ख़्याल पाया जाता था हालाँकि दूसरी भाषाओं के कुछ शब्द ख़ुद अरब भी नहीं अदा कर सकते। जैसे वह रोटी को, अरब जो हैं रोटी को रोटी नहीं कह सकते, रोती कहेंगे। त बोलेंगे ट की बजाय और चूरी को जूरी कहेंगे चे नहीं बोल सकते ज बोलेंगे। फ़रमाया कि जिस तरह ग़ैर अरब अरबी के कुछ शब्द अदा नहीं कर सकते इसी तरह अरब भी ग़ैर भाषाओं के कुछ शब्द नहीं अदा कर सकते लेकिन उनमें क़ौमी बरतरी का जो नशा है तो वे ये बात सोचते नहीं कि हम भी तो दूसरी भाषाओं के कुछ शब्द नहीं इस्तिमाल कर सकते। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिलाल पर दूसरे लोगों को हंसते हुए देखा तो आप ने फ़रमाया तुम बिलाल रज़ि की अज़ान पर हंसते हो हालाँकि जब वह अज़ान देता है तो अल्लाह तआला अर्श पर ख़ुश होता है और तुम्हारे अश्हदो से इसका असहदो कहना ख़ुदा तआला को ज़्यादा प्यारा लगता है। बिलाल हब्शी थे और हब्शी उस ज़माने में ग़ुलाम बनाए जाते थे बल्कि पिछली सदियों में भी, क़रीब की सदियों में भी ग़ुलाम बनाए गए बल्कि आज तक बनाए जा रहे हैं लेकिन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन लोगों में से नहीं थे जिनके नज़दीक कोई ग़ैर क़ौम अपमानित होती है। आप के निकट सब कौमें बराबर तौर पर ख़ुदा तआला की सृष्टि थीं। आप को यूनानियों और हब्शियों से भी वैसा ही प्यार था जैसे अरबों से। कोई अन्तर नहीं था। अरब भी वैसे थे, इसी तरह प्यारे थे। आप को अफ़्रीक़ी भी इसी तरह प्यारे थे जैसे अरब प्यारे थे, जैसे यूनानी प्यारे थे। यही मुहब्बत थी जिसने इन ग़ैर क़ौमों के दिलों में आप का वह इश्क़ पैदा कर दिया था जिसको अरब के भी बहुत से लोग नहीं समझ सकते थे। आप की इसी मुहब्बत के कारण से उन लोगों के दिलों में भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक इश्क़ पैदा हो गया था जिसकी उन लोगों को जिनको फ़िरासत नहीं थी, जिन को इस मुहब्बत की समझ नहीं थी, जिनको वफ़ा और मुहब्बत के इसरार तथा भेद का पता नहीं था उनको समझ नहीं आती थी कि यह किस तरह हो रहा है।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में पैदा हुए फिर अरब क़ौम में पैदा हुए और अरबों से भी क़ुरैश के क़बीला में पैदा हुए जो दूसरी अरब क़ौमों को भी तुच्छ और हीन समझता था। सबसे अच्छा क़बीला आप का था। आप को हब्शियों से क्या जोड़ था। अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किसी क़ौम या क़बीले को मुहब्बत होनी चाहिए थी तो बनू हाशिम को होनी चाहिए थी। आप से किसी को मुहब्बत होनी चाहिए थी तो क़ुरैश को होनी चाहिए थी या फिर अरब के लोगों को होनी चाहिए थी कि वह आप के हमक़ौम थे इसलिए उन लोगों को भी आप से मुहब्बत होनी चाहीए थी। ग़ैर क़ौमों के दिलों में जिनकी हुकूमतों को आप के लश्करों ने पामाल कर दिया था जिनकी क़ौमी सरदारी को इस्लामी सल्तनत ने तबाह करके रख दिया था मुहब्बत हो ही कैसे सकती थी। ग़ैर क़ौमों से जंगें हुईं, उनको शिकस्त हुई और उनकी हुकूमतें ख़त्म हो गईं लेकिन इसके बावजूद उनमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए एक मुहब्बत पैदा हो गई। वह किस तरह पैदा हो सकती थी? उन्हें तो आपसे दुश्मनी होनी चाहिए थी। परन्तु घटनाएं क्या हैं। इसके लिए हम पहले हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की क़ौम की इस मुहब्बत का जायज़ा लेते हैं जो उसे अपने आक़ा के साथ थी। जब आप पकड़े गए अर्थात हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम जब पकड़े गए और आपके ख़ास हवारी पितरस को जिसे आपने अपने बाद ख़लीफ़ा भी निर्धारित किया था, पोलूस ने कहा कि तुम उसके पीछे-पीछे क्यों आ रहे हो? मालूम होता है कि तुम भी इसके साथ हो। पोलूस को शक हुआ कि तुम इसके पीछे आ रहे हो। तुम भी इसके साथ हो तो डर गया। उसने फ़ौरन कहा कि मैं इसका मुरीद नहीं हूँ। मैं तो इस पर लअनत भेजता हूँ। न सिर्फ इन्कार कर दिया बल्कि लअनत भी भेज दी। इस में कोई शंका नहीं कि आप अलैहिस्सलाम के हवारी आप से मुहब्बत ज़रूर करते थे। हज़रत ईसा के जो हवारी थे वे ऐसे थे और आप मुहब्बत भी करते थे। बाद में पितरस भी रूमा में सलीब पर लटकाया गया और उसने बड़ी दिलेरी के साथ मौत को क़बूल किया और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मुहब्बत और इताअत से इन्कार नहीं

किया लेकिन जब हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब पर लटकाया गया तो उस वक़्त उसका ईमान दृढ़ नहीं था। इस वक़्त वह दो-चार थप्पड़ों से डर गया मगर बाद में उसने सलीब को भी बहुत ख़ुशी से क़बूल किया। बहरहाल यह एक नज़ारा था उस मुहब्बत का जो मसीह अलैहिस्सलाम से आप की क़ौम को थी

अब आप की क़ौम के मुक़ाबला में हम इन ग़ुलामों को देखते हैं जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए और फिर वहीं के हो के रह गए। बिलाल रज़ि जो हब्शी ग़ुलाम थे उस से रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जो मुहब्बत थी हम देखते हैं कि इसका बिलाल रज़ि पर क्या प्रभाव था। कुछ लोगों को ज़ाहिरी तौर पर अपने महबूब से गहरी मुहब्बत होती है लेकिन वास्तव उनकी मुहब्बत एक सीमा के अंदर सीमित होती है। हमने यह देखना है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिलाल रज़ि से, जिसके हब्शी ग़ुलाम होने की कारण से क़ुरैश ही नहीं बल्कि सारे अरब नफ़रत का इज़हार करते थे, जिस मुहब्बत का इज़हार किया वह एक आम बराबरी की रूह की कारण से था। यह बराबरी थी कि मुहब्बत करनी है, उसका दिल रखना है यह इसलिए था या हक़ीक़ी मुहब्बत का प्रदर्शन था। दिखावे की मुहब्बत थी या सच्ची मुहब्बत थी। इसका जायज़ा बिलाल रज़ि ही ले सकते हैं हम नहीं ले सकते। अगर जायज़ा लेना है तो फिर हज़रत बिलाल रज़ि के पास जाना पड़ेगा क्योंकि वही सही जायज़ा ले सकते हैं। इस घटना पर तेरह सौ साल से अधिक का अरसा गुज़र चुका है। हम उसका जायज़ा क्या ले सकते हैं। देखना यह है कि बिलाल रज़ि ने आप की मुहब्बत के इज़हार को क्या समझा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बिलाल रज़ि से जो सच्ची मुहब्बत थी उन्होंने उसे क्या समझा? यहां यह सवाल नहीं है कि मैंने क्या समझा। यहां यह सवाल नहीं है कि हमसे पहली सदी के लोगों ने क्या समझा। यहां यह सवाल नहीं कि इस से पहली सदी के लोगों ने क्या समझा। यहां यह सवाल भी नहीं कि ख़ुद सहाबा ने क्या समझा। इन बातों को छोड़ो कि दूसरों ने क्या समझा बल्कि सवाल यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना के लोगों ने, सहाबा ने भी किया समझा बल्कि देखना हमने यह है कि बिलाल रज़ि ने क्या समझा और इस को देखने के लिए एक छोटा सा यह वाक्य है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसका पहले वर्णन हो चुका है कि तुम असहदो कहने पर हंसते हो। आप ने लोगों को कहा हालाँकि इसकी अज़ान सुनकर ख़ुदा तआला भी अर्श पर ख़ुश होता है। वह तुम्हारे अश्हदो से इसके अस्हदो की ज़्यादा क़दर करता है। यह केवल दिलजोई और सामयिक बात थी या गहरी मुहब्बत के आधार पर था या वक़्ती तौर पर इस बात को टालने के लिए आप ने कोई बात की थी या यह गहरी मुहब्बत के आधार पर बात की थी। यही छोटा सा वाक्य जो आप ने कहा था कि अश्हदो से ज़्यादा अल्लाह को असदो पसन्द है। देखना यह है कि इस वाक्य से बिलाल रज़ि क्या समझा। बिलाल रज़ि ने इस वाक्य से यह नतीजा निकाला कि आप के दिल में चाहे मैं ग़ैर क़ौम का हूँ और ऐसी क़ौम का हूँ जो इन्सानियत के दायरे से बाहर समझी जाती है और ग़ुलाम बनाई जाती है मुहब्बत और इश्क़ है। बिलाल रज़ि ने यह समझा कि ग़ैर क़ौम का होने के बावजूद और ऐसी क़ौम का होने के बावजूद जिसको ग़ुलाम बनाया जाता है मुझसे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहब्बत की और इशक़ किया।

हम इस घटना से कुछ समय पीछे जाते हैं यही व्यक्ति जो कहता है कि مَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْن- अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाया-مَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْن कि मेरी मौत भी अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का रब है, फ़ौत हो जाता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हो गया। नई हुकूमतें बन जाती हैं। नए लोग आ जाते हैं और नए परिवर्तन पैदा हो जाते हैं। ज़माना गुज़र गया। नई हुकूमतें भी आ गईं। बहुत सारी तब्दीलियां पैदा हो गईं। कुछ सहाबा अरब से सैंकड़ों मील बाहर निकल जाते हैं, उन्हीं सहाबा में बिलाल रज़ि भी थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद ये सब तब्दीलियां जो आईं तो वह शाम चले जाते हैं और दमिशक़ जा पहुंचते हैं। एक दिन कुछ लोग इकट्ठे हुए। हज़रत बिलाल रज़ि दमिशक़ में थे। वहां लोग इकट्ठे हुए और उन्होंने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त में बिलाल रज़ि अज़ान दिया करता था हम चाहते हैं कि बिलाल रज़ि फिर अज़ान दे। उन्होंने बिलाल रज़ि से कहा। हज़रत बिलाल रज़ि ने इन्कार कर दिया कि नहीं मैं अब अज़ान नहीं दे सकता। बिलाल रज़ि ने कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद मैं अज़ान नहीं दूँगा क्योंकि जब भी मैं अज़ान देने का इरादा करता हूँ तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुबारक ज़माना मेरे सामने आ जाता है, मेरी जज़बाती अवस्था हो जाती है इसलिए मैं अज़ान नहीं दे सकता। मेरी बर्दाश्त से यह बात बाहर हो जाती है। हज़रत उमर रज़ि भी इन दिनों दमिशक़ में आए हुए थे संयोग से उनका भी दौरा था। लोगों ने हज़रत उमर रज़ि से निवेदन किया कि आप बिलाल रज़ि से कहें कि अज़ान दे। हम में वे लोग भी हैं जिन्हों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा है और हमारे कान तरस रहे हैं कि हम बिलाल रज़ि की अज़ान सुनें। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वह ज़माना हमारे सामने आता है। हमारे तसव्वुरात में हज़रत बिलाल रज़ि की अज़ानें आती हैं हम चाहते हैं कि हक़ीक़त में भी एक बार बिलाल रज़ि की अज़ान सुनें और वह ज़माना हमारे सामने ज़रा अच्छी तरह घूम जाए। हम में वे भी हैं जिन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना नहीं देखा सिर्फ बातें सुनी हैं। ऐसे लोग भी वहां मौजूद थे उनके दिल इच्छा रखते हैं कि इस व्यक्ति की अज़ान सुन लें जिसकी अज़ान रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुना करते थे और आप को पसन्द भी थी। हज़रत उमर रज़ि ने बिलाल रज़ि को बुलाया और फ़रमाया लोगों की इच्छा है कि आप आज़ान दें। आप ने फ़रमाया आप समय के ख़लीफ़ा हैं आपकी इच्छा है तो मैं अज़ान दे देता हूँ लेकिन यह बता दूं मैं कि मेरा दिल बर्दाश्त नहीं कर सकता। हज़रत बिलाल रज़ि खड़े हो जाते हैं और बुलंद आवाज़ से उसी रंग में अज़ान देते हैं जिस रंग में वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में अज़ान दिया करते थे। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना को याद कर के आपके सहाबा जो अरब के निवासी थे यह अज़ान सुनते हैं तो उनकी आँखों से आँसू जारी हो जाते हैं और कुछ की चीख़ें भी निकल गईं। हज़रत बिलाल रज़ि अज़ान देते चले जाते हैं और सुनने वालों के दिलों पर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने को याद कर के रिक़्क़त छा जाती है लेकिन हज़रत बिलाल रज़ि जो हब्शी थे, जिनसे अरबों ने सेवाएं लीं, जिन्हें अरबों से कोई ख़ूनी रिश्ता नहीं था और न भाई चारे का सम्बन्ध था हमने देखना है कि ख़ुद उनके दिल पर क्या प्रभाव हुआ। यह तो प्रभाव हुआ उन अरबों का जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने के थे, उनको ज़माना याद आ गया। जो उस ज़माने के अरब नहीं थे उनको भी वे बातें याद आ गईं, रिक़्क़त छा गई या एक दूसरे को देख के रिक़्क़त छा गई लेकिन हज़रत बिलाल रज़ि तो जो अरब भी नहीं थे ग़ुलाम भी थे उनको इस अज़ान का क्या असर हुआ। कहते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि जब अज़ान ख़त्म करते हैं तो बेहोश हो जाते हैं। यह असर होता है और कुछ मिन्ट बाद फ़ौत हो जाते हैं। यह गवाही थी ग़ैर क़ौमों की रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस दावा पर कि मेरे नज़दीक अरब और ग़ैर अरब में कोई अन्तर नहीं है। यह मुहब्बत और यह इशक़ सबसे बड़ी गवाही है जो ग़ैर अरब क़ौमों ने आप के लिए दिखाया। यह है वह सच्ची गवाही, व्यावहारिक गवाही कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो फ़रमाया कि अरब और ग़ैर अरब में कोई अन्तर नहीं तो यह है इसका इज़हार। यह गवाही थी ग़ैर क़ौमों की जिन्होंने आप की मुहब्बत भरी आवाज़ को सुना और इसका असर जो उन्होंने देखा उसने उसे यक़ीन करवा दिया कि उनकी अपनी क़ौम उनसे वह

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

मुहब्बत नहीं कर सकती जो मुहब्बत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनसे थी।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद ,भाग 30 पृष्ठ 263 से 267 ख़ुत्बा जुमा 26 अगस्त 1949 ई)

यह थे हमारे सय्यदना बिलाल रज़ि जिन्होंने अपने आक़ा से ऐसे इश्क़ तथा वफ़ा कि और अल्लाह तआला की तौहीद को अपने दिल में बिठाने और फिर उसके व्यावहारिक इज़हार के वे उदाहरण स्थापित किए जो हमारे लिए आदर्श हैं, हमारे लिए पवित्र उदाहरण हैं। और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भी अपने इस ग़ुलाम से मुहब्बत तथा स्नेह की वे दास्तानें हैं जिनकी तुलना हमें दुनिया में कहीं और नज़र नहीं आ सकती और यही वह चीज़ है जो आज भी मुहब्बत और प्यार की फ़िज़ाओं को पैदा कर सकती है, भाई चारे को पैदा कर सकती है और ग़ुलामी की ज़ंजीरों को तोड़ सकती है। अत: आज भी हमारी नजात इसी में है कि तौहीद की स्थापना और इश्क़े रसूले अरबी के इन उदाहरणों पर स्थापित हों। अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ भी प्रदान फ़रमाए। हज़रत बिलाल रज़ि का वर्णन आज यहां ख़त्म होता है।

इस समय मैं कुछ वफ़ात पाने वालों का भी वर्णन करूँगा। उनका जनाज़ा पढ़ाऊंगा। उनमें से पहला वर्णन मौलाना तालिब याक़ूब साहिब इब्न आदरणीय तय्यब याक़ूब साहिब मुबल्लिग़ सिल्सिला ट्रेनी डॉड ऐंड टोबागो का है। उनकी 8 सितम्बर को 63 साल की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजिऊन

बचपन से ही उनकी तबीयत मज़हब की तरफ़ झुकी हुई थी। यह ट्रेनी डॉड के रहने वाले थे। छोटी उम्र से ही पांचों समय की नमाज़, तिलावत क़ुरआन और इस्लामी किताबों के अध्ययन के शौक़ीन थे। आरम्भिक शिक्षा के बाद उनको ब्रिटिश इंशोरंस में नोकरी मिल गई लेकिन ओ लेवल करने के बाद 13 जनवरी 1979 ई को आपने ज़िन्दगी वक़्फ़ की और जामिया अहमदिया रब्वा में दाख़िला लिया जहां से आपने 1989 ई में शाहिद की डिग्री हासिल की। 1987 ई में आपकी शादी आदरणीया साजिदा शाहीन साहिबा पुत्री मिर्ज़ा मुनव्वर अहमद साहिब दरवेश और साबिक़ नायब नाज़िर आला कादियान से हुई। उनकी पत्नी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत भाई मिर्ज़ा बरकत अली साहिब रज़ि की पोती हैं। जामिया से पास होने के बाद उनकी पहली तक़र्रुरी ज़ाइर (अफ़्रीक़ा)में हुई। वहां 1989 ई से 1992 ई तक लगभग तीन साल सेवा की तौफ़ीक़ पाई। फिर गियाना जमाअत में 1993 ई से 1997 ई तक मिशनरी के तौर पर सेवा का अवसर मिला। फिर वहां से आपका तक़र्रुर घाना की दो विभिन्न स्थानों कूफ़वा रैडवा (Koforidua) और कमासी क्षेत्र में हुआ। 1997 ई से 2004 ई तक वहां सेवा की तौफ़ीक़ पाई। यहां आप बहुत बीमार हो गए और ठीक होने पर आपका तक़र्रुर ट्रेनी डॉड में हुआ जहां आप फ़्री पोर्ट की जमाअत में आख़िर दम तक सेवा करते रहे।

दुनिया के विभिन्न देशों में निहायत इख़लास के साथ सेवा करने के इलावा अपने ज्ञान और अनुभव से इस्लामी शिक्षा लोगों में बाँटते रहे। जहां भी गए जमाअत के प्रत्येक आदमी के साथ आपका व्यक्तिगत सम्पर्क होता था। जमाअत के लोग उनसे विशेष मुहब्बत का सम्बन्ध रखते थे और यह उनसे मुहब्बत का सम्बन्ध रखते थे। पिछले कई साल से उनको गुर्दे की तकलीफ़ थी। डाईलेसिज़ (dialysis) के कारण से सप्ताह में तीन बार इलाज (treatment) के लिए हस्पताल जाना पड़ता था लेकिन आप ने जमाअत के प्रोग्रामों में कोई रोक नहीं आने दी। बहुत अधिक मुत्तक़ी थे, विनम्र थे, विनम्र मिज़ाज थे, नर्म आदत वाले थे, धैर्य वाले थे, इताअत करने वाले थे, विनय वाली प्रकृति के मालिक थे, हर एक को हमेशा मुस्कुराते हुए मिलते। नमाज़ों के अतिरिक्त बाक़ायदगी से नमाज़ तहज्जुद, क़ुरआन करीम की तिलावत, रात सोने से पहले आठ रकअत नफ़ल पढ़ना आपकी आदत था। जमाअत की रवायत की सख़्ती से पाबन्दी करते थे। अपनी फ़ैमिली को भी इन सब नेकियों की नसीहत करते थे। अपने ख़ानदान में बहुत हर दिल-अज़ीज़ थे। पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी के इलावा एक बेटा नासिर याक़ूब और दो बेटियां अमीना याक़ूब और अदीला याक़ूब शामिल हैं। आपके दो भाई भी हैं। तीन बहनें हैं। कुछ भाई बहनें वहां ट्रेनी डॉड में हैं कुछ आस्ट्रेलिया में हैं।

उनकी एक भाभी हेलन याक़ूब हैं। वह कहती हैं कि मैं ने तीस साल पहले बैअत की थी और मौलाना साहिब ट्रेनी डॉड तशरीफ़ लाए तो मुझे हर वक़त बड़े प्यार से धर्म की नई नई बातें सिखाते और इसके कारण से मेरी धर्म सीखने की भावना ज़्यादा पैदा हुई। उस पर बहुत ख़ुश होते थे और तालिब याक़ूब साहिब के इस व्यवहार के कारण ही है मेरे बेटे तय्यब याक़ूब ने अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मुरब्बी बनने की नीयत की है और अब जामिया अहमदिया कैनेडा के दूसरे साल में शिक्षा प्राप्त कर रहा है। फिर वहां एक अहमदी डाक्टर थीं जब यह बीमार थे। वह कहती हैं कि बहुत उच्च आचरण के मालिक थे और हर डाक्टर और नर्स जिन्होंने उनका इलाज किया वह उनके आचरण से बड़ा प्रभावित था। मरीज़ थे और कहीं बैठे होते अगर हस्पताल में कम जगह है और कोई आ गया है तो ख़ुद खड़े हो जाते और दूसरों को जगह देते। मरीज़ों के लिए भी , डाक्टरों के लिए भी एक उदाहरण थे। लोगों के लिए भी एक उदाहरण थे। मिशनरी इंचार्ज साहिब ट्रेनी डॉड और टोबागो लिखते हैं कि हक़ीक़ी रंग में एक मुरब्बी और मुबल्लिग़ की विशेषताएं और गुणों को अपनाए हुए थे। ख़िलाफ़त की इताअत में आप हमेशा आगे-आगे रहते थे। अपने निगरानों की हर बात मानते और जो काम आपके सपुर्द किया जाता उसे भरपूर तौर पर सरअंजाम देने की पूरी कोशिश करते। आप अल्लाह तआला, उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बहुत अधिक मुहब्बत करते थे। क़ुरआन करीम की तिलावत और नमाज़ तहज्जुद की अदायगी में पाबन्द थे।

क़ासिद वड़ायच साहिब वहां ट्रेनी डॉड के मुरब्बी सिल्सिला हैं। यह कहते हैं मेरी पोस्टिंग ट्रेनी डॉड हुई तो उस वक़्त मौलाना साहिब की सेहत कमज़ोर थी और उम्र भी बड़ी थी। यह नौजवान हैं अभी दो तीन साल पहले कैनेडा जामिया से फ़ारिग़ हो के गए हैं। तो कहते हैं कुछ दिन ही हुए थे कि मौलाना साहिब 50 मिन्ट का सफ़र तय कर के अपनी पत्नी और बेटे के साथ मुझे मिलने के लिए तशरीफ़ लाए और बड़े स्नेह का सुलूक फ़रमाया और फिर हर दूसरे दिन, तीसरे दिन मैसिज (message) कर के या फोन कर के हाल मालूम कर लिया करते कि नए नए आए हो तुम्हारी ज़रूरीयात भी होंगी। और फिर नसीहतें भी करते होंगे, समझाते भी होंगे। हर बड़े छोटे से प्यार और मुहब्बत से पेश आते थे। हमेशा ख़िलाफ़त से सम्बन्ध रखने की नसीहत करते और समय के ख़लीफ़ा के लिए दुआ करने की नसीहत करते। उनकी बेटी ने भी लिखा है कि मुझे हमेशा यह कहा करते थे कि परीक्षाओं से पहले भी और हमेशा हर काम के लिए समय के ख़लीफ़ा को लिखो, दुआ के लिए कहो। वहां एक अहमदी मुनीर इब्राहीम हैं कहते हैं कि जब हम तब्लीग़ के लिए किसी जगह जाते तो मौलाना हमेशा हाज़िर होते थे और फिर तब्लीग़ के लिए इलाक़े बांट लेते थे। किसी को कहते थे कि तुम उत्तर में जाओ मैं दक्षिण में जाता हूँ ताकि अधिक से अधिक लोगों में अहमदियत का पैग़ाम पहुंचे। और हमेशा मुस्कुराते रहते। उनके साथ काम करने वाले और नौजवान मुरब्बी भी हैं और दूसरे लोग भी, उन्होंने भी यही बताया है कि जमाअत की तरक़्क़ी के लिए और तब्लीग़ के लिए छोटा सा काम भी कोई करता तो बहुत ख़ुश होते और इस का बड़ा हौसला बढ़ाते। और यह तो हर एक ने लिखा है कि हर समय मुस्कुराते रहते थे। सुलह की आदत वाले थे। छात्र जीवन में भी अगर दोस्तों में कोई नाराज़गी हो जाती तो हमेशा सुलह करवाते और यह कहते कि अहमदी हैं और किसी भाई के लिए दिल में रंजिश नहीं होनी चाहिए। मैंने भी हमेशा उन्हें मुस्कुराते देखा है। ख़िलाफ़त से भी बहुत अधिक वफ़ा का सम्बन्ध था और जैसा कि मैंने बताया उनके बच्चे भी यही बताते हैं कि हमें भी यही कहते थे ख़िलाफ़त से सम्बन्ध रखो और ख़त लिखते रहा करो।

एक नौ मुबाइअ नारेश साहिब कहते हैं कि मैं विभिन्न ग़ैर अहमदी मस्जिदों में जा कर हक़ीक़ी इस्लाम की तलाश किया करता था। जब मैं मौलाना तालिब से मिला तो उसी वक़्त दलीलें सुनने से पहले मेरे ज़हन पर एक बहुत अच्छा असर पड़ना शुरू हो गया और इसी कारण से फिर उन्होंने बैअत भी कर ली। बहरहाल तालिब याक़ूब साहिब ने वक़्फ़ को भी दिल की गहराई के साथ निभाया और कभी कोई बहाना नहीं किया। यही कहते थे कि समय का ख़लीफ़ा जहां भी लगाऐं काम

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

करना है और अगर मुझे कहेंगे कि पाकिस्तान में रहो, पाकिस्तान में कहीं पोस्टिंग होती है तो फिर अपने देश वापस नहीं जाना तो उसके लिए भी तैयार हूँ। और फिर व्यावहारिक तौर पर इस तैयारी के लिए पाकिस्तान के अर्से में यह पंजाबी भी सीखने की कोशिश करते रहे कि अगर यहां लगा दिया तो पंजाबी लोगों से भी सम्बन्ध पड़ सकता है तो पंजाबी सीखते रहे। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए और दर्जात बुलंद करे। उनके बीवी बच्चों की हिफ़ाज़त फ़रमाए और उन को ये नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा आदरणीय इंजनीयर इफ़्तिख़ार अली क़ुरैशी साहिब का है जो साबिक़ वकीलुल माल सालिस भी थे और नायब सदर मज्लिस तहरीके जदीद भी थे। उनको अल्लाह तआला ने बड़ी लंबी उम्र प्रदान फ़रमाई। 3 जून को यह 99 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजेऊन।

इफ़्तिख़ार अली साहिब के पिता का नाम मुमताज़ अली क़ुरैशी साहिब था। यह पेशे के लिहाज़ से वेटरनरी डाक्टर थे। इफ़्तिख़ार अली साहिब मेरठ इंडिया में पैदा हुए थे और अपनी सैकण्डरी और हायर एजूकेशन मेरठ में ही हासिल की। फिर थॉमसन इंजनीयरिंग कॉलेज रुड़की जो अब यूनिवर्सिटी बन गई है इस में दाख़िला लिया जहां से आपने 1944 ई में सिवल इंजनीयरिंग में ग्रेजवेशन पूरी की। छात्र जीवन में ही जमाअत अहमदिया में दाख़िल होने की तौफ़ीक़ मिली। आपके पिता उस वक़्त अहमदी नहीं थे परन्तु इफ़्तिख़ार क़ुरैशी साहिब ने ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का अध्ययन करके तहक़ीक़ के बाद अहमदियत स्वीकार करने का सौभाग्य प्राप्त किया। आप तक अहमदियत का पैग़ाम आपके फूफा मुख़तार क़ुरैशी साहिब के माध्यम से और उनके फूफा के पिता जो मुंशी फ़य्याज़ अली साहिब थे उनके माध्यम से पहुंचा। इफ़्तिख़ार क़ुरैशी साहिब शिक्षा के सिलसिला में अधिकतर अपने ताया तुराब अली साहिब के पास रहते थे। तुराब अली साहिब अभी अहमदी नहीं थे लेकिन इफ़्तिख़ार अली साहिब के फूफा मुख़तार क़ुरैशी साहिब अपने पिता के साथ प्राय क़स्बा सराबा मेरठ में इफ़्तिख़ार अली साहिब के ताया के पास आते रहते थे। क़ुरैशी इफ़्तिख़ार अली साहिब को इन बुज़ुर्गों के माध्यम से अहमदियत का लिट्रेचर मिल जाता था और दिल्ली की जमाअत भी छोटे छोटे पमफ़्लेटस प्रकाशित करती रहती थी। ये पमफ़्लेटस भी इफ़्तिख़ार अली साहिब को अध्ययन के लिए मिल जाते। इफ़्तिख़ार अली साहिब ये समस्त लिट्रेचर सफर के दौरान पढ़ लेते और फिर अपने पिता जी को जा कर दे देते। इफ़्तिख़ार साहिब ने जब थॉमसन कॉलेज में दाख़िला लिया तो आपके फूफा मुख़तार क़ुरैशी साहिब ने उन्हें बाक़ायदा विस्तार से पत्रों के माध्यम से अहमदियत का पैग़ाम देना शुरू कर दिया। इफ़्तिख़ार अली साहिब भी उनका तफ़सीली जवाब देते। उस ज़माना में भी आपको तहज्जुद पढ़ने और ख़ूब दुआएं करने का अवसर मिला लेकिन दिल में बेचैनी और घबराहट थी। इस कैफ़ीयत का इज़हार उन्होंने एक बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि से किया और कुछ सवाल पूछे। हुज़ूर ने जवाब में तहरीर फ़रमाया कि आपके सवाल संक्षिप्त हैं परन्तु सार गर्भित हैं। उनका जवाब ख़त की शक्ल में देना मुश्किल है। आप मेरी अमुक़ किताब का अध्ययन कर लें। इफ़्तिख़ार अली साहिब ने यह किताब अपने फूफा मुख़तार साहिब से प्राप्त की। अध्ययन शुरू किया और जूँ-जूँ आप किताब पढ़ते गए आपको सवालों के जवाब मिलते गए। नवम्बर 1941 ई में आपने ख़त के द्वारा लिखित बैअत कर ली। 1942 ई में क़ादियान जलसे पर तशरीफ़ लाए और क़ादियान के माहौल को देखकर बड़े प्रभावित हुए। हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ि की तक़ारीर को भी आपने बड़े ग़ौर से सुना और फिर वहां बैअत की और इस तरह फिर उनको दस्ती बैअत की भी तौफ़ीक़ मिली। हर साल जलसा सालाना क़ादियान पर तशरीफ़ ले जाया करते थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि से मुलाक़ात का अवसर भी मिलता। जो सवाल उनके ज़हन में होते उनको हुज़ूर की सेवा में रखते, जवाब हासिल करते। ईमान और ईक़ान से झोलियाँ भर के वापस लोटते।

आपने इंडिया में ही गर्वनमेन्ट सर्विस शुरू कर दी थी। पाकिस्तान बनने के बाद तक आप वहां काम करते रहे। 1951 ई में हिजरत की। फिर पाकिस्तान में आबपाशी और तवानाई विभाग में नौकरी की। गर्वनमैंट सर्विस के दौरान कई शहरों में ट्रांसफ़र हुए। बड़ी दयानत से उन्होंने काम किया। जूनीयर इंजीनियर से तरक़्क़ी करते हुए आप चीफ़ इंजीनियर बन गए बल्कि एक अवसर पर कुछ समय आपको गर्वनमेंट पंजाब का सैक्रेटरी आबपाशी और तवानाई का भी बनाया गया। आप ने सैक्रेटरी तक तरक़्क़ी की। बहुत इज़्ज़त वाले और उच्च पदों पर अपने वतन पाकिस्तान की सेवा करने की आपको तौफ़ीक़ मिली। 1983 ई में रिटायर्ड हुए। इसके बाद उन्होंने वक़्फ़ भी किया लेकिन इससे पहले 1980 ई में जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने दौरा स्पेन मुकम्मल फ़रमाने पर वापस रब्वाह तशरीफ़ ला कर इंटरनेशनल एसोसीएशन आफ़ अहमदिया आरकेटकस ऐंड इंजीनियरज़ (IAAAE) की स्थापना की तो इफ़्तिख़ार अली क़ुरैशी साहिब को इसका पहला चेयरमैन निर्धारित फ़रमाया। इस वक़्त यह चीफ़ इंजीनियर के ओहदे पर थे। फिर बाद में रिटायर हो गए और रिटायरमैंट के बाद उन्होंने अपनी ज़िन्दगी वक़्फ़ करने के लिए पेश की। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने वक़्फ़ स्वीकार फ़रमाया और 1983 ई में उनको वकीलुल माल सालिस तहरीक जदीद की ज़िम्मेदारी अता हुई। और 1980 ई में जब निर्धारित किया था तो पहले नामज़दगी थी। फिर बाक़ायदा आप चुने जाते रहे और इसके बाद लगभग पच्चीस साल तक निरन्तर आप इस एसोसीएशन के सदर, मर्कज़ी चेयरमैन रहे और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे के ज़माने में भी उनको काफ़ी काम की तौफ़ीक़ मिली। बुयूतल हम्द क्वार्टर्ज़ की तामीर, जमाअत बिल्डिंगज़ रब्वा में बनाने का अवसर मिला। इदारा तामीरात के निगरान भी आप थे। फिर जो मुख़्तलिफ़ प्राजेक्टस फ़ज़ले उम्र हस्पताल, जामिया अहमदिया, ख़िलाफ़त लाइब्रेरी इत्यादि उनके (IAAAE) के चेयरमैन बनाए गए इसी तरह डायरेक्टर फ़ज़ले उम्र फ़ाउंडेशन के तौर पर भी सेवा की तौफ़ीक़ मिली। 2007 ई में उनको मैं ने नायब सदर मज्लिस तहरीक जदीद मुक़र्रर किया। बड़ी ईमानदारी, लगन और मेहनत से सेवा करने वाले थे। चार ख़लीफ़ाओं का ज़माना उन्होंने देखा और हमेशा हर जगह यह इताअत और मुहब्बत करने वाले पाए गए। ख़ामोश तबीयत वाले थे। हमेशा काम से काम रखते थे। बतौर वाक़िफ़ ज़िन्दगी भी उनको सैंतीस साल सेवा की तौफ़ीक़ मिली। बड़े बेनफ़्स हो के काम करने वाले थे। मैंने भी उनके साथ काम किया। अल्लाह तआला ने दो बेटे और तीन बेटियां उन्हें प्रदान फ़रमाईं। एक बेटा आर्कीटेकट है और एक बेटी लेडी डाक्टर है। अल्लाह तआला उनसे भी रहम और क्षमा का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

तीसरा जनाज़ा रज़िया सुल्ताना साहिबा का है जो हकीम मौलवी ख़ुर्शीद अहमद साहिब की पत्नी थीं। 81 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। मरहूमा शेख़ अल्लाह बख़श साहिब रज़ि सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेटी थीं। जवानी की उम्र से ही नमाज़ रोज़े की सख़्ती से पाबन्द थीं। सारी ज़िन्दगी सादगी और विनम्रता से गुज़ारी। बहुत मेहमान नवाज़ थीं। आपके मियां आदरणीय हकीम मौलवी ख़ुर्शीद अहमद साहिब सदर उमूमी की हैसियत से सेवा करते रहे थे। इस दौरान आपके घर इज्लास ,मीटिंग इत्यादि होती थीं तो उन लोगों की मेहमान-नवाज़ी किया करती थीं। आदरणीय मौलवी साहिब को 1984 ई में अढ़ाई साल तक अल्लाह की राम में अढ़ाई साल तक कैद में रहने की भी सआदत हासिल हुई। यह वक़्त भी आपने अपने पति के पीछे इंतिहाई सब्र और हिम्मत से गुज़ारा और न केवल यह बल्कि रोज़ाना कई लोगों का खाना तैयार करके जेल भिजवाया करती थीं और बड़ी ख़ामोशी से नेकी के काम किया करती थीं। कई ग़रीब बच्चियों की शादियां कीं। कई ग़रीब बच्चियों की परवरिश की। अपने पराए सब इस बात का इज़हार करते हैं कि बहुत प्यार करने वाली शख़्सियत थीं। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में उनकी एक बेटी शामिल हैं। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीय मुहम्मद ताहिर अहमद साहिब इब्न मुहम्मद मन्सूर अहमद साहिब नायब नाज़िर बैयतुल माल क़ादियान का है। यह 28 मई को जिगर की बीमारी के कैंसर से 57 साल की उम्र में नूर हस्पताल क़ादियान में वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजेऊन।

मरहूम हैदराबाद के रहने वाले थे। जामिया अहमदिया कादियान से फ़ारिग़ होने

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

के बाद सितम्बर 1989 ई से अन्तिम सांस तक मई 2020 ई इकतीस साल तक विभिन्न विभागों में सेवा करते रहे। समस्त अरसा माल विभाग में सेवा का अवसर मिलता रहा। बैयतुल माल आमद में सात साल, निज़ामत माल वक़्फ़ जदीद में नौ साल इन्सपेक्टर बैयतुल माल और फिर नायब नाज़िम माल वक़्फ़ जदीद तीन साल, नाज़िम माल वक़्फ़ जदीद आठ साल और नायब नाज़िर बैयतुल माल दो साल सेवा की तौफ़ीक़ मिली। निहायत मुख़लिस, सादा-मिज़ाज, मिलनसार, हमदर्दी की भावना रखने वाले सिल्सिला के ख़ादिम थे। सारे हिन्दुस्तान में दौरे किए और माली निज़ाम से लोगों को आगाही दी और उनको शामिल किया और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इन दौरों के कारण से, उनकी कोशिशों के कारण से वक़्फ़ जदीद के माली बजट में भी बहुत वृद्धि हुई। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में वृद्ध माता पिता के इलावा पत्नी और दो बेटे शामिल हैं। मरहूम मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन साहिब सदर क़ज़ा बोर्ड क़ादियान के बड़े दामाद थे और इनाम ग़ौरी साहिब नाज़िर आला कादियान के ममेरे भाई थे। उनके एक भाई क़ादियान में मुरब्बी सिलसिला हैं। अल्लाह तआला क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए। बच्चों की रक्षा फ़रमाए।

अगला जनाज़ा प्रिय अक़ील अहमद पुत्र मिर्ज़ा ख़लील अहमद बेग साहिब उस्ताद इंटरनेशनल जामिआ घाना का है। अक़ील अहमद पाकिस्तान गया हुआ था जहां उसे yolk sac tumor बीमारी हुई और थोड़ी बीमारी के बाद तेरह साल की उम्र में वफ़ात पा गया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजेऊन।

बचपन से ही बाजमाअत नमाज़ का पाबन्द, अपने से छोटे बच्चों का ख़्याल रखने वाला बहुत नेक और आज्ञाकारी बच्चा था। मदरसा अलहाफ़िज़ घाना से छः पारे हिफ़्ज़ करने की भी तौफ़ीक़ पाई। उनके पीछे रहने वालों में माता पिता के इलावा दो बहनें अज़ीज़ा अदीला और अज़ीज़ा शकीला शामिल हैं। दोनों बच्चियां वाकिफ़ा नौ हैं। उनके पिता मिर्ज़ा ख़लील बैग इंटरनेशनल जामिया अहमदिया घाना में सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। जामिया के एक और उस्ताद नसीरुल्लाह साहिब घाना से लिखते हैं कि अक़ील अहमद बहुत ही प्यारी और हर दिलअज़ीज़ शख़्सियत का मालिक था। इसका हँसता मुस्कुराता चेहरा हमेशा याद रहेगा। बहुत ही मासूम और आज्ञाकारी बच्चा था। नमाज़ बाजमाअत का आदी और क़ुरआन करीम से बहुत अधिक लगाव था। अपनी रूटीन की पढ़ाई के इलावा पिछले सालों से क़ुरआन करीम भी हिफ़्ज़ कर रहा था और रोज़ाना नमाज़ मग़रिब के बाद खाना खा कर मस्जिद चला जाता और अपना सबक़ दोहराता रहता था और स्कूल का काम करने के बाद हमेशा क़ुरआन शरीफ़ का कुछ हिस्सा हिफ़्ज़ कर के फिर सोया करता था और यह कहता था कि मैं बड़ा हो के मुरब्बी सिल्सिला बन कर जमाअत की सेवा करूँगा। अल्लाह तआला उसके भी दर्जात बुलंद फ़रमाए। माँ बाप और बहनों को सदमा बर्दाश्त करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

आजकल यहां जनाज़े हाज़िर तो आते नहीं। बहुत सारे लोग जनाज़ा पढ़ाने की दरख़ास्त करते हैं। इसलिए उनके जनाज़े न जुम्अ पर पढ़ाए जा सकते हैं क्योंकि उन के लिए वक़्त चाहिए। सिर्फ नाम ही पढ़ने शुरू हों तो काफ़ी वक़्त लग जाता है इसलिए प्राय कुछ लोगों के तो मैं जनाज़े पढ़ा देता हूँ। बाक़ियों की दरख़ास्तें आ जाती हैं लेकिन उनको मैं इसी तरह बग़ैर नाम बोले ही बता दूं कि जो भी जनाज़े यहां पढ़ाता हूँ उनमें वे शामिल हो जाते हैं। अल्लाह तआला इन सबसे क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए और जिन लोगों ने दरख़ास्तें दी हुई हैं कि जनाज़े पढ़ाए जाएं, अल्लाह तआला उनको, पीछे रहने वालों को भी सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

बहरहाल जुम्अः के बाद ये समस्त जनाज़ा ग़ायब में पढ़ाऊंगा। इंशा अल्लाह।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 7 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर (उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 11 का शेष

फ़रमाया था चार पाँच हज़ार थी। अभी भी बहुत थोड़ी है। बहरहाल आप फ़रमाते हैं "परन्तु निसन्देह समझो कि यह ख़ुदा के हाथ का लगाया हुआ पौधा है। ख़ुदा उस को हरगिज़ नष्ट नहीं करेगा। वह राज़ी नहीं होगा जब तक कि उसको कमाल तक न पहुंचाए और वह उस की आबपाशी करेगा और इस के गिर्द अहाता बनाएगा और हैरान करने वाली उन्नति देगा। क्या तुमने कुछ कमज़ोर लगाया। अतः अगर यह इन्सान का काम होता तो कभी का यह दरख़्त काटा जाता और इस का नाम तथा निशान भी बाक़ी न रहता।

(मज्मूआ इश्तिहारात भाग 2 पृष्ठ 281- 282 अंजाम आथम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ठ 64)

अल्लाह तआला हमें जमाअत की तरक्कियां पहले से बढ़कर दिखाए। विरोधियों की बुराई और चालों से बचाए। नेक फ़ितरत लोगों की मदद फ़रमाए कि वे इन शंकाओं से पैदा करने वालों और फ़ित्ना फैलाने वालों वालों के चंगुल से निकल कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम और ज़माना के इमाम को मानने वाले हों ताकि इस्लाम की विजय के लिए इस अल्लाह के पहलवान मददगार बन सकें। दुनिया से फ़ित्ना तथा फ़साद भी ख़त्म हो और दुनिया एक ख़ुदा की इबादत करने वाली बन जाए। अल्लाह तआला हमें भी अपने फ़राइज़ अन्जाम देने का सामर्थ्य दे और अल्लाह तआला करे कि अब उन लोगों को भी अक़्ल आ जाए। अब दुआ कर लें।

(अल्फज़ल इन्टरनैश्नल 15 सितम्बर 2020 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

..... पृष्ठ 1 का शेष

उसके वह विरोधी भी थे अतः वह फ़रमाते हैं "सबत का दिन इन्सान के लिए हुआ न इन्सान सबत के दिन के लिए।" (मरकस अध्याय 2 आयत 27) इसके यही अर्थ हैं कि यदि हक़ीक़ी ज़रूरतें पेश आ जाऐं तो इस में सबत के विस्तारपूर्वक आदेशों को समक्ष नहीं रखा जा सकता और न धर्म के कामों को सबत रोक सकता है। यहूदियों में यह बेहूदा ख़्याल पैदा हो गया था कि सबत के दिन तब्लीग़ करनी, नसीहत करना और दूसरे नेकी के काम करने भी नाजायज़ हैं हालाँकि सबत के दिन तो सिर्फ दुनयावी कामों से रोका गया था। कुछ लेखक लिखते हैं कि इतवार के दिन ईसाईयों ने सबत का मनाना इसलिए शुरू किया ताकि ग़ैर यहूदी क़ौमों में इन का विरोध न पैदा हो। बरनबास के ख़त में लिखा है उसका कारण यह है कि मसीह इस दिन मर्दों में से जी उठे थे (इन्साईकलोपीडीया, भाग 10) बहरहाल कोई कारण भी हो यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शिक्षा के विरुद्ध था इस्लाम ने भी सबत का एक दिन निर्धारित फ़रमाया है और वह जुमा का दिन है। जुमा का दिन किसी अनुमान के अनुसार मुसलमानों ने निर्धारित नहीं किया बल्कि अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार निर्धारित किया है इस लिए उन पर वे एतराज़ नहीं होता जो ईसाइयों पर होता है।

इस्लाम ने जुमा के दिन के लिए ये विशेषताएं निर्धारित फ़रमाई हैं। इस दिन छुट्टी रखी जाए । इबादत अधिक की जाए उसे क़ौमी इज्तिमा का दिन बनाया जाए। नहाया धोया जाए। सफ़ाई की जाए। मरीज़ों की अयादत की जाए इसी तरह अन्य क़ौमी और सांस्कृतिक काम किए जाएं। हाँ जुम्अः की नमाज़ से फ़राग़त के बाद आज्ञा दी गई है कि लोग अपने कामों में लग जाएं परन्तु अधिक उचित इसी को क़रार दिया है कि बाद में भी वे अल्लाह के ज़िक्र में व्यस्त रहें।

अफ़सोस है कि मुसलमानों ने भी सबत की क़दर नहीं जानी और जुमा की नमाज़ सिवाए बड़े शहरों के एक अरसा तक हिन्दुस्तान से बिल्कुल मिटी रही। अब कुछ-कुछ इस तरफ़ ध्यान है परन्तु अब भी सौ में से एक मुसलमान सिर्फ जुमा की नमाज़ भी अदा करने के लिए तैयार नहीं इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजिऊन। गर्वनमेन्ट ने भी अहमदिया जमाअत के संस्थापक की बहुत कोशिशों, मेमोरियल और जमाअत अहमदिया की कोशिशों से बहुत मुश्किल के बाद जुमा की नमाज़ के लिए एक घंटा की छुट्टी स्वीकार की है परन्तु अफ़सोस कि मुसलमान अब भी इस से लाभ नहीं उठाते और कई स्थानों पर तो दूसरे मुसलमान साफ़ तौर पर गर्वनमेन्ट के अफ़सरों से कह देते हैं कि जुम्अः की नमाज़ के लिए छुट्टी की दरख़ास्त केवल अहमदियों की शरारत है हम लोग इस में शामिल नहीं।

(तफ़सीर कबीर, भाग 1 पृष्ठ 497 से 498 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

2019-2020 ई में जमाअत अहमदिया पर नाज़िल होने वाले अल्लाह तआला के असंख्य फ़ज़्लों और समर्थनों तथा सहायता के महान निशानों में से कुछ का ईमान बढ़ाने के लिए वर्णन।(अन्तिम भाग....3)

इस वर्ष 2 नए रेडियो स्टेशनों की वृद्धि।

रेडियो पर18 हज़ार 489 घंटे पर आधारित 22 हज़ार 167 प्रोग्राम प्रासरित हुए।

एक अनुमान के अनुसार टीवी और रेडियो के माध्यम से 52 करोड़ लोगों तक अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम के पैग़ाम का प्रचार।

जलसा सालाना यू.के से सम्बन्धित सय्यदना अमीरुल मोमनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का विशेष ख़िताब।

9 अगस्त 2020 ई अर्थात 9 ज़हूर1399 हिज्री शम्सी स्थान इवाने मसरूर,इस्लामाबाद,टलफ़ोरड (सिरे)यू के

रेडियो के माध्यम अहमदियत स्वीकार करना

अल्लाह तआला किस तरह मदद फ़रमाता है, मतादी क्षेत्र के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि माहरीन के अनुसार हमारे अहमदिया रेडियो के सिगनल 80 किलो मीटर तक जाने चाहिऐं इस से ज़्यादा दूर तक सिगनल नहीं जा सकते परन्तु अल्लाह तआला ने हवाओं को ऐसा अधीन किया है कि मोवा नड्डा (MOANDA) शहर जो हमारे रेडियो से 180 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है वहां के अहले सुन्नत के इमाम ने बताया कि अहमदिया रेडियो के सिगनल उन तक बेहतरीन आते हैं और जब से अहमदिया रेडियो का आरम्भ हुआ है इसको निरन्तर सुन रहे हैं। अत: इसके नतीजे में अल्लाह तआला ने उन का दिल खोल दिया और उन्होंने ख़ुद रेडियो स्टेशन आकर अपने बीवी और बच्चों सहित बैअत कर ली।

ख़लील अहमद ख़ान साहिब मुबल्लिग़ चाड की दृढ़ता की घटना

लिखते हैं कि एक क्षेत्र बेअरसीत में काफ़ी समय से हम तब्लीग़ कर रहे थे। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पिछले साल इस क्षेत्र के सुलतान और इसके अधीन 22 गांव के इमाम और चीफ़ सहित जमाअत अहमदिया में शामिल हुए। तब्लीग़ी जमाअत वाले जो पाकिस्तान से वफ़द की सूरत में चाड देश आए थे इस क्षेत्र में पहुंच गए। एक बार हमारे मुअल्लिम साहिब की मौजूदगी में ये लोग आए। जब परिचय हुआ तो तब्लीग़ी जमाअत वालों ने बड़े हैरान हो कर हमारे मुअल्लिम से पूछा कि जमाअत अहमदिया इधर भी मौजूद है। हमारे मुअल्लिम साहिब ने उनको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब "मसीह हिन्दुस्तान में" तोहफ़ा के तौर पर दी। फिर वे लोग इस क्षेत्र से चले गए। कुछ दिन के बाद दुबारा इस क्षेत्र में आए और क्षेत्र के सुलतान से कहा कि जमाअत अहमदिया एक झूठी जमाअत है और यह आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुन्किर हैं और काफ़िर हैं। पाकिस्तानी गर्वनमैंट ने उन लोगों को काफ़िर क़रार दिया है। आप लोगों ने जमाअत अहमदिया में शामिल हो कर बहुत बड़ी ग़लती की है। क्षेत्र के सुलतान ने उन्हें जवाब दिया कि जो बातें आप लोग जमाअत अहमदिया के बारे में बता रहे हैं वे तो हम लोगों ने उनमें देखी नहीं। वे तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानते हैं, उन पर ईमान लाते हैं, इन्सानियत की सही अर्थों में सेवा करते हैं। बाक़ी रह गया सवाल कि पाकिस्तानी गर्वनमेंट ने क्या कहा है ,काफ़िर क़रार दिया है या नहीं, उसका जहां तक सम्बन्ध है तो आप लोग चाड की राजधानी जाएं वहां जमाअत अहमदिया का हेडक्वार्टर मौजूद है वहां गर्वनमेन्ट के भी दफ़ातिर हैं या हेडक्वार्टर है वहां जाकर गर्वनमेन्ट से पूछें कि उसने जमाअत अहमदिया को जमाअत मुस्लिमा के तौर पर रजिस्टर्ड क्यों किया है। इस पर बहरहाल वे ख़ामोश होकर वहां से चले गए।

अहमद मुस्तफ़ा शीबा साहिब कहते हैं बैअत से सात साल पहले ख़्वाब में एक नौजवान को इंडियन कपड़े पहने देखा और पूछा यह कौन है? जवाब मिला कि यह "इमाम महदी" है। मैंने दिल में कहा कि इमाम महदी तो ऑले बैअत में से होना है, यह इंडियन कैसे हो गया? फिर अचानक मैंने इस शख़्स को गले लगा लिया और रोने लगा। फिर इस के सात दिन के बाद मुझे एम टी अल्अरबिया मिल गया और मैं और मेरी पत्नी छ: साल एम टी ए देखते रहे और अन्त में बैअत कर के मोमिनीन की जमाअत में शामिल हो गए। कहते हैं कि मैं अर्ज़ करना चाहता हूँ कि बैअत के बाद मैंने अपनी शख़्सियत में स्पष्ट तबदीली महसूस की। मैं अब वह नहीं रहा जो बैअत से पहले था। क़ुरआने करीम की तिलावत और चिन्तन के माध्यम में लोगों से बड़ी विनम्रता और विनय से और नरमी से मामला करता हूँ जिसके कारण से लोग भी मुझसे ख़ुश हैं परन्तु हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान नहीं लाते। मेरे पिता ने भी मेरे अंदर अख़लाक़ी तबदीली देखकर मुझे कहा कि हम चाहते हैं कि तुम हमेशा इसी जमाअत से चिमटे रहो परन्तु हमें क़ायल करने की कोशिश न करना। वह यह नहीं जानते कि मेरे अन्दर तब्दीली उस इमाम के अनुकरण की बरकत से है जिसको यह स्वीकार करना नहीं चाहते।

मराक़श से अलहसनी साहिब लिखते हैं कि मैं 2002 ई से 2019 ई तक पश्चिमी देशों में रहा हूँ। बस नाम का मुसलमान था। मैंने बहुत से काम ख़ुदा की इच्छा के ख़िलाफ़ किए हैं। कई बार मुझे जेल हुई। 2016 ई में ऑस्ट्रिया की एक जेल में क़ैद हुआ। वहां ज़िन्दगी में पहली बार एम टी ए देखा। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़सीदे सुन कर बहुत प्रभावित हुआ और एक ऐसा एहसास हुआ जो पहले ज़िन्दगी में कभी न हुआ था। दिल इतमीनान और सन्तोष से भर गया। मैं जेल में रोज़ एम टी ए देखने लगा। अजीब बात यह है कि हमारे कमरे में एक ही टीवी था परन्तु अल्लाह तआला ने ऐसा प्रबन्ध फ़रमाया कि मुझे अपना अलग टीवी मिल गया इसी तरह मोबाइल फ़ोन भी मिल गया। मैंने विभिन्न मौलवियों के इस मुबारक जमाअत के ख़िलाफ़ झूठ का भी जायज़ा लिया। मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़सीदे सुनकर दिल में कहा कि इनमें जो बातें हैं नामुमकिन है कि किसी आम मौलवी की हों। यह कलाम तो दिल में उतरने वाला है। अत: मैं ईमान ले आया और फ़ैसला किया कि यूरोप से अपने मुल्क वापस जा कर नए सिरे से ज़िन्दगी शुरू करूँगा। जमाअत से परिचय से पहले मुझे केवल दुनिया की तलाश थी और किसी चीज़ की परवाह न थी परन्तु अब मेरी ज़िन्दगी एक दम बदल गई है। मैं अब एक बुरे आदमी से सच्चा इन्सान बन गया हूँ और अब इतमीनान और सुकून का एहसास हुआ है जो पहले कभी नहीं हुआ था।

फिर मिस्र के उसामा साहिब कहते हैं 2015 ई में एक दिन चैनल बदलते हुए संयोग से एम टी ए अल-अरबी नज़र आया जिस पर लिका मअल अरब प्रोग्राम लगा हुआ था। इस के माध्यम से मेरा जमाअत अहमदिया से परिचय हुआ। फिर में एक दिन में सात सात घंटे एम टी ए देखता। यह सिल्सिला 2015 ई से 2019 ई तक चलता रहा और सब ख़ुत्बे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई इत्यादि के प्रोग्राम सुने। इसके बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम की सच्चाई को मानने वाला हो गया परन्तु अभी तक मैंने बैअत नहीं की थी। इस अर्से में ख़्वाब में देखा कि किसी नामालूम रेगिस्तानी स्थान पर जलसा आयोजित हो रहा है, ख़ेमे लगे हुए हैं और रात का वक़्त है। ऐसे में वहां उन्होंने मुझे देखा (इस से तो यही लगता है या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा बहरहाल स्पष्ट नहीं है तो वहां आए हैं और मैं हुज़ूर के पीछे पीछे चल रहा हूँ। वुज़ू के बाद वे बड़े ख़ेमे की तरफ़ गए और मैं आपके पीछे पीछे चलने लगा। यहां मेरी आँख खुल गई और ख़्वाब ख़त्म हो गया। मैं इस ख़्वाब पर बहुत ख़ुश था और फिर कहते हैं कि आप से ज़्यादा मुहब्बत करने लगा। दिन रात, सोते जागते आपकी मुहब्बत को महसूस करता हूँ। आपके सब ख़ुत्बे सुनता हूँ और व्यवहार में लाने की कोशिश करता हूँ। शायद उन्होंने मुझे ही देखा था इस बात से यही ज़ाहिर है।

मुबल्लिग़ इंचार्ज गिनी कनाकरी कहते हैं कि यहां पाबंदियों के कारण से, बाक़ायदा जलसा सालाना के आयोजन पर पाबन्दी है इसलिए लोग सारा साल पैसे

जमा कर के सेरालियून के जलसा पर जाते हैं। इस साल भी एक बड़ी संख्या अपने ख़र्च पर सेरालियून जलसा पर गई। एक नौजवान मुअल्लिम अब्दुल्लाह साहिब जो कि बहुत ग़रीब हैं और जमाअत के मामूली अलाउंस पर उनका गुज़ारा है एक साल से हर माह कुछ रक़म अपने जलसा में शामिल होने के लिए जमा कर रहे थे। जब जलसा के दिन क़रीब आए तो उन्होंने अपने क्षेत्र के एक इमाम को जिसको वह तब्लीग़ कर रहे थे इस जलसे में शामिल होने के लिए तैय्यार किया और अपनी सारी रक़म जो अपने सफ़र के लिए जमा की हुई थी उस को अदा कर दी। जब उनसे पूछा गया कि आपने तो ख़ुद जलसा पर जाना था फिर क्यों नहीं गए? कहने लगे कि मैं तो पहले ही पक्का अहमदी हूँ परन्तु इस इमाम का जाना ज़रूरी था ताकि यह अहमदियत की सच्चाई को अपनी आँखों से देख लेता और इस के दिल में अहमदियत दाख़िल हो जाती इसलिए मैंने अपने माल और अपनी भावनाओं की क़ुर्बानी इस उद्देश्य से की है ताकि यह अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम को ख़ुद देख करके इस इलाही सिल्सिला में दाख़िल हो जाए।

तो यह इन्क़िलाब है जो अल्लाह तआला पैदा फ़र्मा रहा है। दिलों में एक ख़ास जोश और जज़्बा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मदद करने वालों के लिए पैदा कर रहा है। हज़ारों मील दूर बैठा हुआ एक शख़्स है जिसने कभी समय के ख़लीफ़ा को भी शायद नहीं देखा परन्तु एक तड़प है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम अहमदियत का पैग़ाम लोगों तक पहुंचे और लोग इस में शामिल हों।

बुलग़ारिया से मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि एक डाक्टर "मानीकातुफ़ (MANIKATOF) जमाअत के बहुत मुख़लिस दोस्त हैं। ईसाई हैं। तीन बार जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हो चुके हैं। उन्होंने मेरे से मुलाक़ात भी की है और मेरे साथ तस्वीरें खिंचवा चुके हैं। बुलग़ारिया आने के बाद उन्होंने ये तस्वीरें अपने क्लीनिक्स जो विभिन्न शहरों में मौजूद हैं उनमें लगाई हुई हैं और मरीज़ों को अहमदिया जमाअत का परिचय, ख़िलाफ़त का परिचय बड़े अच्छे शब्दों में करवाते हैं। इस तरह उनके माध्यम से बहुत से लोगों तक जमाअत का पैग़ाम पहुंच रहा है और तब्लीग़ के नए रास्ते खुल रहे हैं।

जलसा पर आने वाले लोग भी कई कारणों से चाहे ख़ुद स्वीकार करें न करें परन्तु तब्लीग़ का माध्यम बन रहे हैं और उनके माध्यम से फिर बैअतें भी हो जाती हैं।

अमीर साहिब इंडोनेशिया अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं कि बोगोर के क्षेत्र के एक गांव में एक मौलवी ने अपनी तक़रीर में जमाअत अहमदिया के संस्थापक पर आरोप शुरू कर दिए और जो लोग बैअत करके अहमदिया जमाअत में शामिल हुए थे उनका भी विरोध करने लग गए परन्तु हमारे नौमुबाईन साबित-क़दम रहे। मौलवी के विरोध की कोशिशें कुछ भी बिगाड़ न सकीं। दूसरी तरफ़ विभिन्न मौलवी ईद वाले दिन से पहले दुनिया से विदा हो गया। इसके बाद अबू हाशिम नामक एक और मौलवी जो कि मज्लिस उल्मा का सदर है उसने विरोध शुरू किया। हमारे नौमुबाईन के बारे में कहता था कि ये लोग मुसलमान नहीं हैं, जमाअत अहमदिया का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं है परन्तु अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसा करना हुआ कि कुछ समय के बाद इस को भी ओहदे से हटा दिया गया। फिर एक Dedi नामक मौलवी ने जमाअत का सख़्त विरोध शुरू कर दिया। नौमुबाईन को खुले आम डराता और कहता था कि अहमदियों के टुकड़े टुकड़े कर के मछलियों के आगे फेंक दिया जाएगा परन्तु अल्लाह तआला की तक़दीर इस तरह प्रकट हुई कि इस को पक्षाघात हो गया और कई माह तक पीड़ित रहने के बाद फ़ौत हो गया और अपनी फ़ैमली के इलावा कोई शख़्स उस की वफात पर भी नहीं गया।

तो बहरहाल हमने तो हर जगह सब्र और दुआ से काम लेना है और यही हमारा काम है और यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला या तो उन लोगों को हिदायत दे या फिर उनसे हमारी जान छुड़ाए और उनको उनके अन्जाम तक पहुंचाए।

आख़िर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ। आप फ़रमाते हैं

"कभी कोई झूठ इतना चल नहीं सकता। आख़िर दुनिया में हम देखते हैं कि बुराई करने वाले झूठे और फ़रेबी अपने झूठ में थक कर रह जाते हैं। फिर क्या कोई ऐसा मुफ़्तरी हो सकता है जो बराबर पच्चीस वर्ष से ख़ुदा तआला पर झूठ बोल रहा हो" उस ज़माना में जब आप ने यह फ़रमाया था पच्चीस बरस हो चुके थे"और थका न हो और ख़दा को भी इस के लिए ग़ैरत न आए बल्कि उसके समर्थन में निशान ज़ाहिर करता रहे। यह अजीब बात है। ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला हमेशा सच्चों ही की सहायता और समर्थन करता है।" आज एक सौ तीस साल के बाद भी हम देख रहे हैं कि अल्लाह तआला के वे समर्थन हमारे साथ हैं।

फिर फ़रमाते हैं कि "इस वक़्त जब कोई न जानता था और न यहां आता था। यह कहा "अर्थात अल्लाह तआला ने कहा कि

يَأْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ

और

يَأْتِيْكَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ

क्या यह मुफ़्तरी कर सकता है कि ऐसा कहे और फिर ख़ुदा भी ऐसे मुफ़्तरी की परवाह न करे बल्कि उसकी पेशगोई पूरी करने के लिए दूर दराज़ से लोग भी उसके पास आते हैं और हर किस्म के तोहफ़े और नक़द भी आने लगें। अगर यह बात हो कि मुफ़्तरी के साथ भी ऐसे मामलात होते हैं फिर नबुव्वत से ही अमान उठ जाए।" फ़रमाया कि "यही निशान हैं जो हमारी जमाअत की मुहब्बत और इख़लास में तरक़्क़ी का कारण हो रहे हैं। मुफ़्तरी और सच्चों को तो उस के मुँह ही से देखकर पहचान सकते हैं।"

फ़रमाया "सच्चाई का यह भी एक निशान है कि सच्चों की मुहब्बत नेक फ़ितरत लोगों के दिलों में डाल देता है। मूर्ख को यह राह नहीं मिलती कि नूर का हिस्सा ले वह हर बात में कुधारणा ही से काम लेता है।" फ़रमाया "हमको तकल्लुफ़ और बनावट की ज़रूरत नहीं....हमारा अपना कोई काम नहीं है ख़ुदा तआला का अपना काम है और वह ख़ुद कर रहा है।"

आप फ़रमाते हैं

"अल्लाह तआला हमको मह्जूब होने की हालत में नहीं छोड़ेगा बड़े जलाल से फ़रमाया "अल्लाह तआला हमको मह्जूब होने की हालत में नहीं छोड़ेगा। वे सब पर इतमाम-ए-हुज्जत कर देगा। याद रखो आकाशीय और ज़मीनी आदमियों में फ़र्क़ होता है जो ख़ुदा तआला की तरफ़ से आते हैं वह ख़ुद उनकी इज़्ज़त को ज़ाहिर करता और उनकी सच्चाई को रोशन कर के दिखाता है और जो उस की तरफ़ से नहीं आते और मुफ़्तरी होते हैं वह आख़िर अपमानित होकर तबाह हो रहे हैं।"

फिर फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआला नहीं चाहता कि हमारी जमाअत का ईमान कमज़ोर रहे। मेहमान अगर न भी चाहे तो भी मेज़बान का फ़र्ज़ है कि उसके आगे खाना रख दे। इसी तरह पर यद्यपि निशानों की ज़रूरत कोई भी न समझे तब भी अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से जमाअत के ईमान को बढ़ाने के लिए निशान ज़ाहिर कर रहा है। यह भी सच्ची बात है कि जो लोग अपने ईमान को निशानों के साथ मशरूत करते हैं वे सख़्त ग़लती करते हैं। हज़रत मसीह के शागिर्दों ने मायदा का निशान मांगा तो यही जवाब मिला कि अगर उसके बाद किसी ने इन्कार किया तो ऐसा अज़ाब मिलेगा जिसकी तुलना न होगी।"

फिर फ़रमाया: "अत: छात्र का अदब यही है कि वह ज़्यादा सवाल न करे और निशान मांगने पर ज़ोर न दे। जो इस शिष्टाचार के तरीक़ा को समक्ष रखते हैं ख़ुदा उनको कभी बे-निशान नहीं छोड़ता और उनको विश्वास से भर देता है। सहाबा रज़ि की हालत को देखो कि उन्होंने निशान नहीं मांगे परन्तु क्या ख़ुदा ने उनको बे-निशान छोड़ा? हरगिज़ नहीं। कष्ट पर कष्ट उठाएं, जानें दीं , शत्रुओं ने औरतों तक को ख़तरनाक तकलीफों से हलाक किया परन्तु सहायता अभी तक प्रकट न हुई। आख़िर ख़ुदा के वादा की घड़ी आ गई और उनको सफल कर दिया और दुश्मनों को हलाक किया। यह सच्ची बात है कि ख़ुदा सब्र करने वालों के साथ होता है।"

फ़रमाया कि "इस में कुछ भी शक नहीं कि इन सारी तरक़्क़ियों की जड़ ईमान ही है। इसी के माध्यम से इन्सान बड़ी बड़ी मंज़िलें तय करता और सैर करता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 354 से 356 प्रकाशन 1984 ई)

फिर विरोधी को सम्बोधित कर के आपने फ़रमाया

"अब हे विभिन्न मौलवियो !और सज्जादा नशीनो ! यह झगड़ा हम में और तुम में हद से ज़्यादा बढ़ गया है। और यद्यपि यह जमाअत तुम्हारी जमाअतों की तुलना में थोड़ी सी और संख्या में कम है और शायद इस वक़्त तक जब आप ने बयान

शेष पृष्ठ 9 पर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 29 October 2020 Issue No.44

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 2का शेष

जमाअत अहमदिया ने सभ्यता की सार गर्भित और भरपूर परिभाषा प्रस्तुत की। इस प्रोग्राम के बाद जब मुझे उनसे बातचीत का अवसर मिला तो मैंने उनसे पर्यावरण और मौसमी शंकाओं की बात की तो उनका कहना था कि यह एक विश्वव्यापी मसला है और जब तक समस्त देश सामूहिक कोशिश न करें तो इसमें सकारात्मक रूप से आगे बढ़ना संभव नहीं। ऐसे वैश्विक समस्याओं का हल किसी एक देश की कोशिशों से संभव नहीं होता। मुझे ख़ुशी हुई कि इन्सानी समस्याओं पर उनकी सामूहिक नज़र बहुत गहरी है।

सबीन लीडिग (Sabine Leidig) साहिबा जो मेंबर पार्लियामेंट हैं कहती हैं: मेरा सम्बन्ध ख़ुद तो किसी धर्म से भी नहीं लेकिन बहैसीयत एक धार्मिक लीडर , इमाम जमाअत अहमदिया ने आने वाली इन्सानी नस्ल के दर्द को जिस तरह समय से पहले महसूस करके आज की लीडरशिप को ख़बरदार किया है, इसका मेरे दिल पर गहरा असर है। और मेरी इच्छा है कि यह पैग़ाम आम हो ताकि इन्सानों की सामूहिक सोच इस बारे में बेदार हो सके और अगली नस्लों को ज़िम्मेदारी की समझ हो सके। जो आज His Holiness का पैग़ाम था वह मेरे दिल तक पहुंचा और उसने असर किया क्योंकि उन्होंने अमन के पैग़ाम के साथ-साथ जिस तरफ़ ध्यान दिलाया वह बच्चे हैं। अर्थात उन्हें बच्चों के बारे में फ़िक्र है, खासतौर पर ऐटमी हथियारों के ख़तरों से जो हैं उनसे ख़बरदार किया। ख़लीफ़ा को केवल आज ही के इन्सानों से मुहब्बत नहीं बल्कि अगली आने वाली जो नस्लें हैं उनकी भी फ़िक्र और उनसे भी प्यार है। आज मुझे इस्लाम के बारे में विशेष रूप से स्पष्ट हुआ कि औरत का इस्लाम में क्या स्थान है और औरत का सम्मान और महत्त्व जिसका ख़लीफ़ा ने आज वर्णन किया।

नाहोंडी (Nahawandi) साहिबा अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं: इमाम जमाअत अहमदिया के इस ख़िताब का यूरोप में व्यापक पैमाने पर प्रकाशन होने से इस्लाम के बारे में पाए जाने वाली शंकाएं दूर होंगी और एक तरफ़ा तौर पर पाए जाने वाले नकारात्मक विचारों को दूर किया जा सकेगा।

Axel Knohrig साहिब जो मेंबर पार्लियामेंट हैं अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहते हैं: मुझे आज खासतौर पर ख़लीफ़ा का ख़िताब पसन्द आया क्योंकि उन्होंने दुनिया में अमन फैलाने की तरफ़ ध्यान दिलाया और साथ-साथ स्पष्ट भी किया कि प्रत्येक व्यक्ति की क्या-क्या ज़िम्मेदारी है ताकि अमन स्थापित किया जा सके। यह जो पैग़ाम ख़लीफ़ा ने आज के ख़िताब में दिया है उनकी अपनी हस्ती में देखा और महसूस भी किया जा सकता है। अगर सब लोग यह पैग़ाम समझें तो यक़ीनन अमन फैलाया जा सकेगा। एक और अहम पहलू जो आज ख़लीफ़ा ने वर्णन किया वह यह है कि आपस में विभिन्न धर्म और कल्चर किस तरह अमन से मिलकर रह सकते हैं। उन्होंने जिन बातों का वर्णन किया है इन सब बातों से मैं बतौर इसाई सहमति करता हूँ।

प्रोफ़ैसर Christoph Gultman साहिब अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं: मुझे आज का प्रोग्राम बहुत पसंद आया। His Holiness के ख़िताब से मुझे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। बहुत से क़ुरआन के उद्धरण मैंने साथ साथ नोट भी किए जिनका ख़लीफ़ा ने वर्णन किया था। अब मैं उन्हें घर जा कर ज़रूर दोबारा पढ़ूँगा भी। मुझे इस बात की भी ख़ुशी हुई कि ख़लीफ़ा अमन का पैग़ाम फैला रहे हैं।

एक ईसाई मेहमान ने कहा मुझे पहली बार अवसर मिला कि His Holiness का ख़िताब सुनूँ। इस से पहले मैंने कभी भी यह नहीं सुना था कि इस्लाम अमन को इतना महत्त्व देता है और अमन स्थापित करना चाहता है। इस बात की भी मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि His Holiness का ख़िताब आज विभिन्न राजनीतिक पार्टीयों के प्रतिनिधियों ने सुना। इसी तरह यहूदी रब्बी और दूसरे मुसलमान फ़िर्क़ों के लोग भी मुझे यहां नज़र आए।

एक मेहमान ने अपने विचारों वर्णन करते हुए कहा: आज मुझे एक बहुत ही हिक्मत वाले व्यक्ति का ख़िताब सुनने का अवसर मिला जिन्होंने अपने ख़िताब में प्रत्येक व्यक्ति को इसकी ज़िम्मेदारी की तरफ़ ध्यान दिलाया कि किस तरह से अमन स्थापित किया जा सकता है। His Holiness लोगों को अन्धेरे से रोशनी की तरफ़ ला सकते हैं। उन्होंने बहुत आसान शब्दों में स्पष्ट कर दिया कि सब इन्सानों को अमन और प्यार से इकट्ठे रहना चाहिए। इसके लिए सबसे ज़रूरी यह बात है कि एक दूसरे का सम्मान किया जाए। यह बात भी उन्होंने वर्णन की कि दुनिया में हर चीज़ काफ़ी संख्या में मौजूद है और सबके लिए काफ़ी है अगर उसको सही तरह प्रयोग किया जाए।

एक औरत वर्णन करती हैं यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि यह व्यक्ति His Holiness क्यों है। एक ऐसे लीडर हैं जो निहायत ही प्यार और मुहब्बत प्रकट करते हैं लेकिन पैग़ाम में बहुत स्पष्ट हैं और प्रत्येक को इसके फ़र्ज़ों की तरफ़ ध्यान दिलाने वाले हैं। यह लीडरशिप में बहुत ही ज़रूरी बात होती है।

एक मेहमान अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं His Holiness ने बहुत सी प्रमुख बातों की तरफ़ ध्यान दिलाया। सबसे पहले जिस बात का उन्होंने वर्मन किया वह यह थी कि आजकल के समाज में धर्म को महत्त्व नहीं दिया जाता और धर्म को नकारात्मक नज़र से देखा जाता है। यह बात हमें बतौर ईसाई भी महसूस होती है। इसके अतिरिक्त जो बात मुझे ख़लीफ़ा के ख़िताब में बहुत प्रमुख लगी वह शिक्षा तथा तर्बीयत का महत्त्व है। इस हवाला से तो अहमदिया मुस्लिम जमाअत वैसे ही एक उदाहरण है। क्योंकि जब इन्सानों को इल्म हो कि उनकी पवित्र किताबें क्या शिक्षा देती हैं तो बहुत सी मुश्किलों से हम आज बच सकेंगे।

एक मेहमान ने कहा: मुझे हैरत हो रही थी कि ख़लीफ़ा के ख़िताब में जो शिष्टाचार और इन्सानी कर्मों का वर्णन हो रहा था वह मेरी आशा के अनुसार था। मैं इन बातों से 100 प्रतिशत सहमति रखता हूँ। ख़लीफ़ा की शख़्सियत भी हैरान करने वाली शख़्सियत महसूस होती है। एक बात जो मुझे ख़लीफ़ा के ख़िताब में सबसे अधिक पसन्द आई वह यह थी कि इस बात का कोई लाभ नहीं कि अपने धर्म की शिक्षा का इल्म तो हो लेकिन इस पर अनुकरण न किया जाए। असल बात तो यह है कि इन्सान अपने कर्मों से स्पष्ट करे कि वह अपने अंदर उच्च आचरण रखता है।

एक मेहमान अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं: मुझे अभी ख़लीफ़ा से मुलाक़ात करने का अवसर मिला था और मैं अभी तक इस से बहुत ही प्रभावित हूँ। मैं इस बात का शुक्रगुज़ार हूँ कि आज के दिन एक ऐसा प्रोग्राम उस स्थान पर आयोजित हो सका। आज की मुलाक़ात से पहले में बहुत ही भयभीत और चिन्तित था क्योंकि मुझे पता नहीं था कि एक ख़लीफ़ा से किस तरह मिला जाता है। लेकिन जब उनसे मुलाक़ात हुई तो जल्द ही मुझे तसल्ली हो गई और यह अवश्य के charisma की ही कारण थी। आज के ख़िताब में मुझे यह बात बहुत पसन्द आई कि उन्होंने इस्लाम के बारह में जो शंकाएं हैं उनको रद्द किया। साथ जो अमन का पैग़ाम उन्होंने वर्णन किया वह भी निहायत ही महत्त्वपूर्ण था।

एक मेहमान मेंबर पार्लियामेंट कहते हैं: उन के लिए यह प्रोग्राम बहुत ही लाभदायक रहा। His Holiness ने एक बहुत अच्छे अंदाज़ में शंकाओं को रद्द किया और इस तरह से ऐसे विषयों पर बात करने से लोगों का सुधार हुआ। इसका निसन्देह बहुत से लोगों को लाभ हुआ होगा। यह ज़रूरी था कि ख़लीफ़ा हाज़रीन को यह स्पष्ट करते कि इस्लाम की शिक्षा हक़ीक़त में अमन पर आधारित है।

एक औरत अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं: जब पहली बार मेरी नज़र ख़लीफ़ा पर पड़ी तो यह मेरे लिए हैरान करने वाली बात थी लेकिन साथ-साथ एक सम्मान भी था। मुझे इस्लाम धर्म से वैसे ही दिलचस्पी है और एक बात आज के ख़िताब से मुझे यह स्पष्ट हुई कि मुझे अभी बहुत कुछ इस्लाम के बारह में सीखना होगा। यह बात इसलिए भी ज़रूरी है ताकि लोगों की शंकाएं ख़त्म की जाएं। असल में इस्लाम तो अमन का धर्म है और इसलिए भी यह आज का ख़िताब ज़रूरी था ताकि जिनको भी शंकाएं हैं वे दूर की जा सकें।

एक मेहमान अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहते हैं: ख़लीफ़ा की वैसे तो समस्त बातें मुझे पसंद आईं और उन्होंने एक बहुत ही प्यारी और अमन वाली शिक्षा प्रस्तुत की। लेकिन एक बात जिसने मुझे बहुत हैरान किया वह यह थी कि अनिवार्य नहीं कि इन्सान बदला ले बल्कि माफ़ करना भी लाभ पहुंचा सकता है।

एक मेहमान Arno Tappe साहिब भी इस आयोजन में शामिल थे। उन्होंने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: मैं पहले भी समय के ख़लीफ़ा का ख़िताब सुन चुका हूँ। इस समय भी आपकी बातों का मुझ पर एक असर हुआ था और इस बार भी आपकी बातों का एक विशेष ही असर हुआ है। क्यों समय के ख़लीफ़ा के ख़िताब का बहुत स्थानों पर चर्चा होगी इसलिए मेरा परामर्श है कि समय के ख़लीफ़ा के इस ख़िताब को शीघ्रतर प्रिंट करवा कर सब मेहमानों को और सब members of parliament इत्यादि को दे दिया जाए। इस तरह सब तक समय के ख़लीफ़ा के शब्द सीधा पहुंच जाऐंगे।

(शेष.....)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad